The Making of Biblical Womanhood

तथाकथित “बाइबल आधारित स्त्री-भूमिका” का निर्माण

How the Subjugation of Women Became Gospel Truth

स्त्री की अधीनता कैसे सुसमाचार का सत्य बन गई

लेखिका: बेथ एलिसन बार (Beth Allison Barr), बेलर विश्वविद्यालय (Baylor University) में इतिहास की प्रोफ़ेसर (विशेष क्षेत्र: मध्य युग)

Beth Allison Barr · जर्मन अनुवाद: Hans-Jörg Ronsdorf · अप्रैल 2021 · अक्टूबर 2026 में संशोधित

यह पुस्तक उस पुस्तक पर आई प्रतिक्रियाओं में से एक है जो 1991 में अमेरिका में प्रकाशित हुई थी: Recovering Biblical Manhood & Womanhood। वह पुस्तक विवाह, कलीसिया और समाज में स्त्री और पुरुष की भूमिकाओं की एक स्पष्ट रूप से पदानुक्रमित समझ का समर्थन करती है। वह 2008 से जर्मन भाषा में भी उपलब्ध है (नीचे देखिए)। उसके लेखक या संपादक हैं वेन ग्रूडम (Wayne Grudem) (जो अपनी “Biblische Dogmatik” [बाइबल आधारित धर्मसिद्धांत] के लिए जाने जाते हैं, जो जर्मन में भी उपलब्ध है) और सुप्रसिद्ध धर्मशास्त्री जॉन पाइपर (John Piper)।

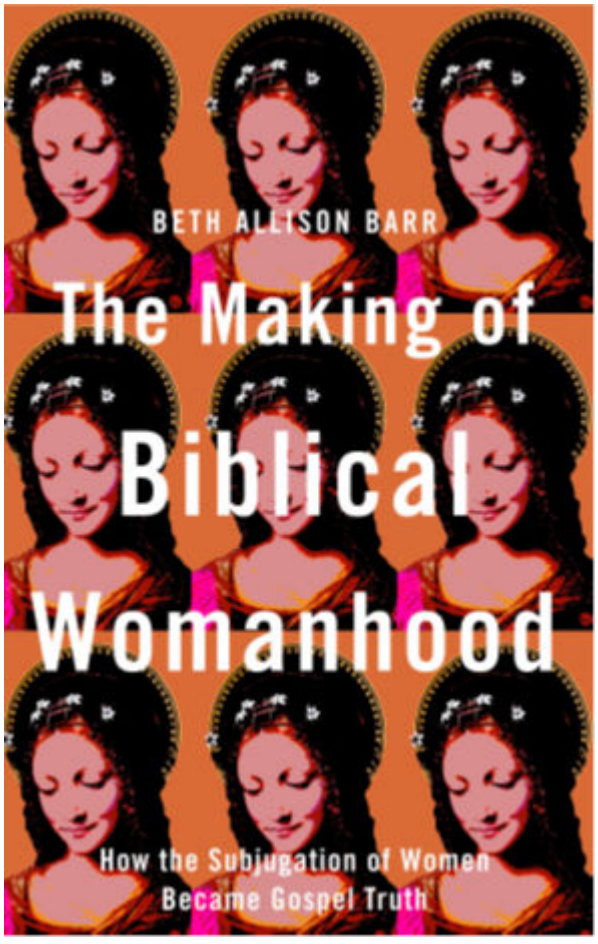

यह इस पुस्तक पर एक प्रतिक्रिया है:

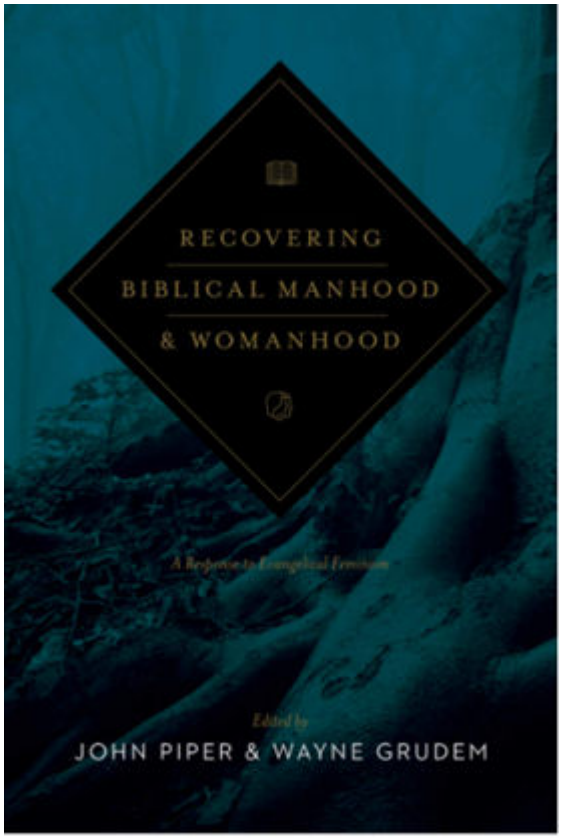

जर्मन में:

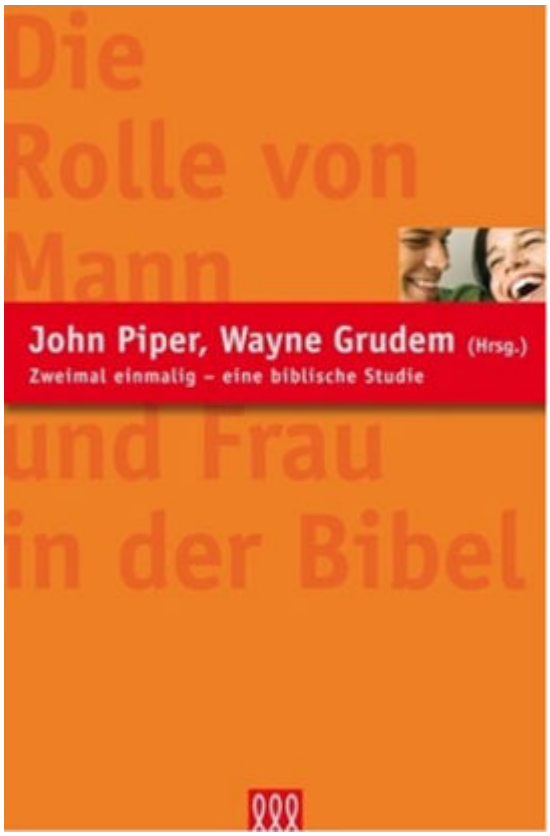

https://www.3lverlag.de/schnellbestellung/289-die-rolle-von-mann-und-frau-in-der-bibel.html

विषय-सूची

आभार

भूमिका

1. पितृसत्ता का आरंभ
2. क्या हो, यदि "बाइबल आधारित स्त्री-भूमिका" पौलुस से आई ही न हो?
3. मध्य युग के बारे में हमारी चुनिंदा स्मृति
4. सुधारवाद (रिफ़ॉर्मेशन) की वह कीमत जो सुसमाचारवादी स्त्रियों ने चुकाई
5. अंग्रेज़ी बाइबल से स्त्रियों को मिटाना
6. अधीनता को पवित्र ठहराना
7. "बाइबल आधारित स्त्री-भूमिका" को सुसमाचार के सत्य का दर्जा देना
8. क्या अब स्त्रियों को स्वतंत्र करने का समय नहीं आ गया?

अध्याय 2 का नमूना-अंश, अनुवाद (फ़ुटनोट्स के बिना)

क्या हो, यदि हमारी "बाइबल आधारित स्त्री-भूमिका" पौलुस से न आई हो?

"मुझे पौलुस से नफ़रत है!"

मैं आपको बता नहीं सकती कि मैंने अपने विद्यार्थियों से यह कितनी बार सुना है – अधिकतर युवा स्त्रियों से, जिन पर इस बात के गहरे निशान, बल्कि घाव पड़ गए हैं कि पौलुस को उनके विरुद्ध कैसे इस्तेमाल किया गया: जब उनसे कहा गया कि वे चुप रहें (1 कुरिन्थियों 14), अपने पतियों के अधीन रहें (इफिसियों 5), पुरुषों को शिक्षा न दें और न उन पर अधिकार चलाएँ (1 तीमुथियुस 2), और घर पर काम करें (तीतुस 2)। उन्हें सिखाया गया कि परमेश्वर ने स्त्रियों को इसलिए ठहराया है कि वे पुरुषों की अगुवाई के पीछे चलें (1 कुरिन्थियों 11) और परिवार और घर पर ध्यान दें (कुलुस्सियों 3; 1 पतरस 3), और यह कि परिवार के अलावा अन्य कार्य स्त्रियों के लिए गौण होने चाहिए – और यदि हों भी, तो अधिकतर मजबूरी में या तब, जब उनके बच्चे घर छोड़ चुके हों।

कुछ वर्ष पहले एक छात्रा मेरे कार्यालय में आई, कहने को तो अपने गृहकार्य (टर्म पेपर) पर चर्चा करने, परंतु जल्दी ही स्पष्ट हो गया कि वह वास्तव में अपनी बुलाहट पर बात करना चाहती थी। उसने मुझसे पूछा: क्या परमेश्वर ने आपको प्रोफ़ेसर, माँ और पास्टर की पत्नी – तीनों होने के लिए बुलाया है? क्या यह कठिन था? क्या घर से बाहर काम करने के कारण आपका विवेक आपको कचोटता था? क्या आपके पति ने आपका साथ दिया? आपकी कलीसिया के लोग क्या सोचते थे? उसने एक रूढ़िवादी पृष्ठभूमि से आई, अपने करियर के प्रति सजग एक मसीही स्त्री के रूप में अपनी कुंठा के बारे में बताया, जो कलीसिया और परिवार की अपेक्षाओं को अपने पेशेवर लक्ष्यों के साथ मेल में लाने का प्रयास कर रही थी। हाल ही में अपने पिता से हुई एक बातचीत से वह नाराज़ थी। अपने मुख्य

विषय (मेजर) को लेकर चिंतित होकर उसने उनसे सलाह माँगी थी। उन्होंने यह कहकर उसकी चिंताओं को शांत करने का प्रयास किया कि उसका मुख्य विषय इतना महत्वपूर्ण नहीं है, क्योंकि वह तो वैसे भी विवाह करेगी और काम नहीं करेगी। स्तब्ध होकर उसने उत्तर दिया: "डैड, क्या आप सचमुच मुझे चार साल के लिए कॉलेज इसलिए भेज रहे हैं कि मैं अपनी डिग्री का कभी उपयोग ही न करूँ?"

घर से बाहर काम करने वाली स्त्रियों के प्रति पिता का यह रवैया असामान्य नहीं है। जैसा हमने देखा है, 2017 के एक बार्ना (Barna) अध्ययन ने पाया कि सामान्य रूप से अमेरिकी लोग अगुवाई की भूमिकाओं में स्त्रियों के साथ अधिकाधिक सहज होते जा रहे हैं और उन बड़ी बाधाओं को अधिक समझने लगे हैं जिनका सामना स्त्रियाँ कार्य-स्थल पर करती हैं – परंतु सुसमाचारवादी मसीही इसमें पीछे रह गए हैं। सुसमाचारवादी सोच में शायद सबसे चौंकाने वाली खाई कुछ विशेष अगुवाई-भूमिकाओं में स्त्रियों को लेकर है। 2016 में मैंने टिप्पणी की थी कि स्त्रियों के प्रति वेन ग्रूडम का रवैया – कि उन्हें कभी पुरुषों पर अधिकार नहीं चलाना चाहिए – उनके लिए राष्ट्रपति पद की किसी महिला उम्मीदवार का समर्थन करना असंभव बना देता है। बार्ना अध्ययन संकेत देता है कि मैं इसमें सही थी। ग्रूडम जैसे श्वेत सुसमाचारवादी अगुवे, जो राष्ट्रपति पद के लिए डोनाल्ड ट्रम्प (Donald Trump) की दावेदारी के पीछे खड़े हुए, उसी समूह के हैं जो किसी महिला राष्ट्रपति के साथ सबसे कम सहज है। कम से कम कुछ सुसमाचारवादी और रिपब्लिकन मतदाताओं (27–35 प्रतिशत) के लिए हिलेरी क्लिंटन (Hillary Clinton) के साथ समस्या केवल यह नहीं थी कि वे डेमोक्रेट हैं, बल्कि यह भी कि वे एक स्त्री हैं (27 प्रतिशत सुसमाचारवादी मतदाताओं और 35 प्रतिशत रिपब्लिकन मतदाताओं ने कहा कि वे किसी महिला राष्ट्रपति के साथ असहज महसूस करते हैं)। तीन वर्ष बाद मुझे कोई आश्चर्य नहीं हुआ कि एलिज़ाबेथ वॉरेन (Elizabeth Warren) की राष्ट्रपति पद की दावेदारी भी उसी लिंग-आधारित गिलोटिन के नीचे आ गई।

विचारों का प्रभाव होता है। ये सुसमाचारवादी धारणाएँ – वे स्त्री की अधीनता के अटल होने के पक्ष में क्यों तर्क देती हैं – इस बात में जड़ पकड़े हुए हैं कि वे पौलुस की व्याख्या कैसे करते हैं। Council on Biblical Manhood and Womanhood पूरकतावाद[1] के अपने परिचय में भले ही उत्पत्ति 2 से आरंभ करे, परंतु सृष्टि के इस वृत्तांत को पढ़ने का उसका ढंग 1 कुरिन्थियों 11 और 1 तीमुथियुस 2 से आता है। पौलुस के शब्द पूरकतावादी शिक्षाओं के हर पहलू को निर्धारित करते हैं। सुसमाचारवादी पौलुस के लेखों को ऐसे पढ़ते हैं मानो वे लिंगों के बीच स्थायी और ईश्वरीय रूप से ठहराए गए भूमिका-भेद निर्धारित करते हों। पुरुष वह अधिकार चलाते हैं जो स्त्रियों के पास नहीं है।

पुरुष अगुवाई करते हैं, स्त्रियाँ पीछे चलती हैं। पौलुस हमें यही बताता है।

क्या आश्चर्य है कि मेरे विद्यार्थी पौलुस से नफ़रत करते हैं?

परंतु क्या हो, यदि हमने पौलुस को गलत पढ़ा है? युवाओं के बीच हमारी सेवकाई के आरंभिक वर्षों में मैं और मेरे पति किशोरों के एक समूह को सप्ताहांत के एक सुसमाचार-प्रचार सम्मेलन में ले गए। वक्ताओं में से एक ने सुसमाचार-प्रचार का अपना गुप्त हथियार बताया – यह प्रश्न: "क्या हो, यदि तुम गलत हो?" मुझे उस सम्मेलन की अधिक बातें याद नहीं, परंतु वह प्रश्न मेरे मन में बस गया। एक इतिहासकार के रूप में अपने काम में मैंने उसे उपयोगी पाया है – क्या हो, यदि मैं अपने निष्कर्षों में गलत हूँ? क्या मैं प्रमाणों पर फिर से विचार करने को तैयार हूँ? एक शिक्षिका के रूप में भी मैंने उसे उपयोगी पाया है, विशेषकर जब कोई विद्यार्थी मेरे सामने कोई अलग विचार रखता है। "क्या हो, यदि मैं गलत हूँ?" – यह प्रश्न मुझे दूसरों की बात बेहतर ढंग से सुनने में सहायता करता है। यह मुझे नम्र बनाए रखता है। यह मुझे एक बेहतर विद्वान बनाता है।

तो पूरकतावादी सुसमाचारवादियों से मेरा प्रश्न यह है: क्या हो, यदि आप गलत हैं? क्या हो, यदि सुसमाचारवादियों ने पौलुस को आधुनिक संस्कृति के चश्मे से समझा है, बजाय इसके कि वैसे समझें जैसे पौलुस स्वयं समझा जाना चाहता था? सुसमाचारवादी आंदोलन को डर है कि स्त्रियों की अगुवाई को स्वीकार करने का अर्थ सांस्कृतिक दबाव के आगे झुकना है। परंतु क्या हो, यदि कलीसिया स्त्रियों की अगुवाई को अस्वीकार करके ही सांस्कृतिक दबाव के आगे झुक रही हो? क्या हो, यदि पौलुस की हमारी व्याख्या – और उसके परिणामस्वरूप स्त्रियों को अगुवाई के कार्यों से बाहर रखना – किसी "सीधी और स्वाभाविक" पढ़ाई का नहीं, बल्कि इस बात का परिणाम हो कि हम अपने आसपास के दृष्टिकोणों और सोच के ढर्रों के अनुसार ढल जाते हैं? अतीत के मसीहियों ने स्त्रियों को अगुवाई से बाहर रखने के लिए भले ही पौलुस का उपयोग किया हो, परंतु इसका अर्थ यह नहीं कि स्त्रियों की अधीनता बाइबल के अनुसार है। इसका अर्थ केवल यह है कि आज के मसीही वही गलती दोहरा रहे हैं जो अतीत के मसीहियों ने की थी – अर्थात् स्त्रियों के साथ अपने व्यवहार को उस संसार के अनुसार ढालना जो हमारे चारों ओर है, न कि उस संसार के अनुसार जिसे यीशु हमें संभव करके दिखाता है।

इसलिए जब मेरे विद्यार्थी कहते हैं कि उन्हें "पौलुस से नफ़रत है", तो मैं उत्तर देती हूँ: आप पौलुस से नफ़रत नहीं करते; बल्कि आप इस बात से नफ़रत करते हैं कि पौलुस के पत्र बाइबल आधारित लिंग-भूमिकाओं की उस समझ का आधार कैसे बन गए जो स्त्रियों का दमन करती है। पौलुस-अध्ययन की एक अग्रणी विद्वान, बेवर्ली रॉबर्ट्स गवेंटा (Beverly Roberts Gaventa), इस बात पर खेद प्रकट करती हैं कि सुसमाचारवादियों ने "पौलुस के पत्रों की पंक्तियों को ऐसे धर्मवैज्ञानिक कथनों और नैतिक दिशानिर्देशों के लिए खंगालने में, जिनका कड़ाई से पालन किया जाना चाहिए," इतना समय लगा दिया कि हम पौलुस का बड़ा लक्ष्य ही चूक गए। हमने एक होने के उसके आह्वान को एकरूपता के लिए सीमाओं की पहरेदारी तक सीमित कर दिया है; हमने मसीह की देह के "क्रांतिकारी स्वरूप" को लिंग और शक्ति के एक कठोर पदानुक्रम से बदल दिया है। गवेंटा की अपील के अनुसार "पौलुस के साथ मिलकर सोचने" के बजाय, सुसमाचारवादियों ने पौलुस को अपने ही सांस्कृतिक युद्धों का हथियार बना दिया है। नए नियम के विद्वान बॉयकिन सैंडर्स (Boykin Sanders) कहते हैं कि अब समय आ गया है कि जब बात स्त्रियों की हो, तो पौलुस को सही ढंग से समझा जाए। "न पुरुष, न स्त्री" शीर्षक के नीचे मोटे अक्षरों में वे तर्क देते हैं: "अश्वेत कलीसिया के लिए यहाँ शिक्षा यह है कि कलीसिया के कार्य में लिंग-आधारित भेदभाव अस्वीकार्य है।" पौलुस हमें दिखाता है कि लिंग-आधारित भेदभाव "संसार की रीतियों की ओर लौटना" है, और हम "क्रूस पर चढ़ाए गए मसीह के सुसमाचार के नए संसार" में बुलाए गए हैं।

सच्चाई – सुसमाचारवादी वास्तविकता – यह है कि हमने पौलुस को अपने अनुसार ढालने पर इतना ध्यान लगाया कि हम स्वयं को उस बात के अनुसार ढालना भूल गए जिसके लिए पौलुस हमें बुलाता है: मसीह में एक होना। बेहतर को चुनने और "क्रूस पर चढ़ाए गए मसीह के सुसमाचार के नए संसार" को अपनाने के बजाय, हमने वही करते रहना चुना जो मनुष्य सदा से करते आए हैं: पदानुक्रम और शक्ति का अपना ही गुम्मट बनाना।

क्योंकि हम पौलुस को अलग ढंग से पढ़ सकते हैं

मध्य युग के एक पुरोहित ने विवाह पर मेरा सबसे प्रिय उपदेश लिखा है। बहुत कम लोग उसका नाम जानते हैं, यद्यपि डोरोथी एल. सेयर्स (Dorothy L. Sayers) ने अपने जासूसी क्लासिक "The Nine Tailors" (जर्मन में "Die neun Schneider"; यह भी मेरी प्रिय पुस्तकों में से है) में उसे उद्धृत करके मेरा दिल जीत लिया। उसका नाम जॉन मर्क (John Mirk) था, और वह चौदहवीं शताब्दी के अंत और पंद्रहवीं शताब्दी के आरंभ में पश्चिमी इंग्लैंड में रहता था। उसके उपदेशों का संग्रह, Festial, इंग्लैंड में लोकप्रिय हो गया – इतना लोकप्रिय कि 1547 में आधिका-

रिक प्रोटेस्टेंट उपदेशों का पहला संस्करण कुछ हद तक इसी प्रभाव का प्रतिकार करने के लिए लिखा गया। इस बात के प्रमाण हैं कि Festial के उपदेश सुधारवाद (रिफ़ॉर्मेशन) की पूर्व-संध्या तक छपते रहे, और अपने कैथोलिक सिद्धांत के बावजूद Festial का प्रचार महारानी एलिज़ाबेथ प्रथम के पूरे शासनकाल में होता रहा।

सुनिए, Festial के इस उपदेश में पति और पत्नी के वैवाहिक संबंध का वर्णन कैसे किया गया है: "इसलिए परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार पुरुष को समान आयु, समान स्तर और समान कुल की स्त्री से विवाह करना चाहिए।" पाठ आगे कहता है: "इसलिए पुरुष अपने पिता और माता को छोड़कर उसके पास जाए, जैसे अपने ही एक अंग के पास, और वह उससे प्रेम करे और वह उससे, सच्चे मन से एक दूसरे से, और वे दोनों एक तन हों।" उपदेश पदानुक्रम पर नहीं, बल्कि इस बात पर ज़ोर देता है कि पति और पत्नी "सच्चे मन से एक दूसरे से" प्रेम करें और "एक तन" बनें। जब पुरोहित स्त्री की अंगूठी पर आशीष देता है, तो वह समझाता है कि यह "परमेश्वर का प्रतीक है, जिसका न आदि है न अंत, और वह उसे उसकी उस उँगली में पहनाता है जिसमें एक नस उसके हृदय तक जाती है, यह दिखाने के लिए कि वह सबसे बढ़कर परमेश्वर से प्रेम करे और उसके बाद अपने पति से"। अंगूठी घोषणा करती है कि स्त्री की निष्ठा पहले परमेश्वर की है और फिर उसके पति की। यद्यपि यह उपदेश बाइबल-वचनों से भरा है और उत्पत्ति 1-3 तथा मत्ती 22 और यूहन्ना 2 से भरपूर उद्धरण देता है, वह पौलुस को उद्धृत नहीं करता। उसमें इफिसियों, कुलुस्सियों, तीतुस या यहाँ तक कि 1 पतरस का भी कोई उल्लेख नहीं है – नए नियम के वे लेख, जिनमें, जैसा सब जानते हैं, स्त्रियों से अपने पतियों के अधीन रहने का आग्रह किया गया है। नए नियम के ये अंश, जो "घरेलू नियम-पट्टिकाएँ" (Haustafeln)[2] कहलाते हैं (इफिसियों 5:21–6:9; कुलुस्सियों 3:18–4:1; 1 पतरस 2:18–3:7; तीतुस 2:1-10), लिंग-भूमिकाओं पर आधुनिक चर्चाओं पर छाए हुए हैं, और उन्होंने 1998 में "Baptist Faith and Message" में जोड़े गए उस संशोधन की नींव रखी कि पत्नियाँ अपने पतियों के अधिकार के "सद्भावपूर्वक अधीन" रहें। परंतु इतिहासकार क्रिस्टीन पीटर्स (Christine Peters) ध्यान दिलाती हैं कि मर्क का मध्यकालीन उपदेश "विवाह में अच्छे जीवन के आधार के रूप में स्त्री की अधीनता को बहुत कम महत्व देता है"। मर्क यह नहीं कहता कि पत्नी अपने पति की आज्ञा माने। वास्तव में उसका उपदेश ज़ोर देता है कि हव्वा ठीक इसी कारण संकट में पड़ी कि उसने अपने पति से बहुत अधिक प्रेम किया; और इसलिए विवाह की अंगूठी इस बात का प्रतीक नहीं कि पत्नी अपने पति की संपत्ति है – वह पत्नियों के लिए एक स्मरण है कि वे परमेश्वर को पहले स्थान पर रखें।

अपने शोध में मैंने पाया कि मध्य युग के उत्तरार्ध के इंग्लैंड में उपदेशों में पौलुस के उन अंशों का प्रचार बहुत कम होता था जिनके विरुद्ध मेरे विद्यार्थी विद्रोह करते हैं। यह आधुनिक सुसमाचारवादी जगत के उपदेशों से एक गंभीर अंतर है – और काफ़ी आश्चर्यजनक भी, जब हम सोचते हैं कि मध्यकालीन संसार भी प्राचीन और हमारे आधुनिक संसार जितना ही पितृसत्ता की ओर झुका हुआ था (इस पर अधिक अगले अध्याय में)। यह उस बात से भी एक गंभीर अंतर है जो हमें स्त्रियों के विषय में पौलुस के लेखों के बारे में सिखाई गई है – कि पूरे मसीही इतिहास में उनका उपयोग एक अटूट धागे की तरह परमेश्वर की उस योजना को बनाए रखने के लिए किया गया कि पुरुष अगुवाई करें और स्त्रियाँ पीछे चलें।

यह बिल्कुल सच नहीं है। उदाहरण के लिए कैथोलिक परंपरा को लीजिए। सुसमाचारवादी सोचते प्रतीत होते हैं: क्योंकि कैथोलिक परंपरा स्त्रियों का अभिषेक (ऑर्डिनेशन) नहीं करती, इसलिए वह भी विवाह में पुरुष के सिर होने के समर्थन में पौलुस का सहारा लेती होगी। ऐसा नहीं है, या कम से कम लगातार ऐसा नहीं है। धर्म-विज्ञान के विद्वान डैनियल सेरे (Daniel Cere) बताते हैं: "कैथोलिक परंपरा में कभी भी औपचारिक शिक्षा की ऐसी कोई परंपरा नहीं रही जो [वैवाहिक] अधीनता का समर्थन करती हो"। मध्य युग के इतिहासकार एल्किन ब्लेमायर्स (Alcuin

Blamires) उन "कष्टदायक विरोधाभासों" (व्यावहारिक भी और बाइबल संबंधी भी) का वर्णन करते हैं जो लिंग, अधिकार और मसीह की देह के विषय में मध्यकालीन कैथोलिक शिक्षाओं का पीछा करते रहे। उदाहरण के लिए, क्योंकि पति पाप करते थे, वे अक्सर अपनी पत्नियों के लिए बुरे अगुवे सिद्ध होते थे – और इस प्रकार मध्यकालीन प्रचारकों के लिए पुरुष के अधिकार की "आधार-रेखा" धुँधली हो जाती थी। जैसा कि पंद्रहवीं शताब्दी के आरंभ के एक लेख ने तर्क दिया, स्त्री को आँख मूँदकर अपने पति के पीछे नहीं चलना चाहिए, क्योंकि – जैसा मर्क के विवाह-उपदेश में कहा गया है – उसकी निष्ठा सबसे पहले यीशु के प्रति थी, जो उसका "सबसे महत्वपूर्ण पति" है। मध्यकालीन स्त्रियों के लिए सिर के रूप में यीशु पति के अधिकार से ऊपर हो सकता था; कभी-कभी स्त्रियाँ अगुवाई भी सँभाल सकती थीं। बारहवीं शताब्दी के एक प्रसिद्ध स्कॉलैस्टिक विद्वान पीटर एबेलार्ड (Peter Abelard) बाइबल की उस घटना पर विचार करते हैं जिसमें एक स्त्री यीशु का तेल से अभिषेक करती है (मत्ती 26:6-13; मरकुस 14:3-9; लूका 7:37-50)। एबेलार्ड लिखते हैं कि जब "पुरुष नहीं, बल्कि स्त्री मसीह के सिर से जुड़ी होती है", तो वह "वास्तव में उसे 'मसीह' के रूप में स्थापित करती है।" एक स्त्री को अपना तेल से अभिषेक करने देकर यीशु पुरुष के प्रभुत्व को समाप्त कर देता है – वह एक स्त्री को वह करने देता है जो उस समय तक केवल पुरुष कर सकते थे: राजा का अभिषेक करना। ब्लेमायर्स एबेलार्ड के तर्क को "देह को स्त्री और सिर को पुरुष मानने वाले पारंपरिक लिंग-संबंध का एक चौंकाने वाला स्थानांतरण" बताते हैं। ब्लेमायर्स लिखते हैं कि एबेलार्ड के लिए उस स्त्री द्वारा यीशु का अभिषेक एक "नामकरण" है। "यही स्त्री है जो परमपवित्र का मसीह के रूप में अभिषेक करती है।" मैं इस पर बहुत कुछ और कह सकती हूँ, परंतु मुख्य बात यह है: पुरुष के सिर होने को लेकर सुसमाचारवादियों के जुनून के बावजूद, अतीत और वर्तमान के मसीही इस विषय में कम निश्चित रहे हैं। 1988 के अपने प्रेरितिक पत्र ("Mulieris dignitatem") में पोप जॉन पॉल द्वितीय (Johannes Paul II.) का रुख इसका एक अच्छा उदाहरण है। वे संकेत देते हैं कि विवाह में पुरुष के प्रभुत्व और स्त्री की अधीनता को उचित ठहराने के लिए इफिसियों 5 में पौलुस के लेखों का उपयोग करना वैसा ही होगा जैसा इन अंशों का उपयोग दासप्रथा को उचित ठहराने के लिए करना।

क्योंकि पौलुस का उद्देश्य कभी पत्नियों की अधीनता पर ज़ोर देना नहीं था

तो आइए, पत्नियों की अधीनता के बारे में बात करें – एक विचार जिसे सुसमाचारवादी नए नियम की घरेलू नियम-पट्टिकाओं से निकालते हैं। जैसा हमने देखा है, ऐतिहासिक संदर्भ संकेत देता है कि पत्नियों की अधीनता पौलुस के लेखों का लक्ष्य नहीं थी, घरेलू नियम-पट्टिकाओं में भी नहीं। क्या हो, यदि पौलुस ने इन नियम-पट्टिकाओं को इसलिए शामिल नहीं किया कि मसीहियों को निर्देश दे कि वे रोमी साम्राज्य के लिंग-पदानुक्रम का पालन कैसे करें, बल्कि इसलिए कि उन्हें सिखाए कि अपने रोमी परिवेश में अलग ढंग से कैसे जिएँ? क्या हो, यदि घरेलू नियम-पट्टिकाओं को स्त्रियों के लिए नए नियम के "आतंक के पाठों" के रूप में नहीं, बल्कि रोमी पितृसत्ता के प्रतिरोध के रूप में पढ़ा जा सके?

यदि उन्हें ज्यों का त्यों लिया जाए ("सरल और शाब्दिक व्याख्या" के रूप में), तो घरेलू नियम-पट्टिकाएँ रोमी पितृसत्तात्मक ढाँचे को पवित्र ठहराती प्रतीत होती हैं: स्त्रियों, बच्चों और दासों पर paterfamilias (पति/पिता) का अधिकार। कुलुस्सियों 3 का पाठ इसे अच्छी तरह दिखाता है: "हे पत्नियो, अपने-अपने पति के अधीन रहो, जैसा प्रभु में उचित है। हे पतियो, अपनी-अपनी पत्नी से प्रेम रखो, और उनसे कठोरता न करो। हे बालको, सब बातों में अपने माता-पिता की आज्ञा मानो, क्योंकि प्रभु में यह भाता है। हे पिताओ, अपने बच्चों को रिस न दिलाओ, कहीं ऐसा न हो कि उनका साहस टूट जाए।

हे दासो, जो शरीर के अनुसार तुम्हारे स्वामी हैं, सब बातों में उनकी आज्ञा मानो; मनुष्यों को प्रसन्न करनेवालों के समान दिखाने के लिए नहीं, परंतु मन की सीधाई से, प्रभु का भय मानते हुए" (कुलुस्सियों 3:18-22)।

यदि आप रोमी पितृसत्ता के बारे में अधिक नहीं जानते: पुरुष का संरक्षकत्व रोमी कानून था। पत्नियों को कानूनी रूप से अपने पतियों के अधिकार के अधीन रहना पड़ता था; अविवाहित स्त्रियों को अपने पिताओं या निकटतम पुरुष संबंधियों के अधिकार के अधीन रहना पड़ता था; स्त्रियाँ संपत्ति की स्वामी नहीं हो सकती थीं और न स्वतंत्र रूप से व्यापार चला सकती थीं; स्त्रियाँ कोई कानूनी या वित्तीय लेन-देन तब तक नहीं कर सकती थीं जब तक कोई पुरुष उनकी ओर से कार्य न करे। इस ऐतिहासिक दृष्टि से यह आश्चर्य की बात नहीं कि पहली शताब्दी के रोमी लेखों (नए नियम) में पत्नियों के बारे में ऐसी चर्चाएँ मिलती हैं जो पहली शताब्दी के रोमी संसार में पत्नियों के जीवन की वास्तविकता को दर्शाती हैं। पौलुस द्वारा अपनाया गया यह निर्देश कि स्त्रियाँ अपने पतियों के अधीन रहें, ठीक वही है जिसकी रोमी संसार अपेक्षा करता।

आधुनिक सुसमाचारवादी होने के कारण हम यह बात समझ ही नहीं पाते।

पौलुस ने पहले मसीहियों से यह नहीं कहा कि वे बाकी सब लोगों जैसे बनें; उसने उनसे कहा कि मसीही होने के नाते उन्हें अलग होना है। रेचल हेल्ड इवांस (Rachel Held Evans) मसीही घरेलू नियम-पट्टिकाओं को रोमी पितृ-सत्ता का एक "यीशु-रीमिक्स" कहती हैं। विद्वत्ता संकेत देती है कि "रीमिक्स" शब्द एक अच्छा वर्णन है। उदाहरण के लिए, नए नियम की विद्वान कैरोलिन ओसिएक (Carolyn Osiek) और मार्गरिट मैकडोनल्ड (Margaret MacDonald) तर्क देती हैं कि इफिसियों की घरेलू नियम-पट्टिका में समाहित नैतिक शिक्षाएँ यूनानी-रोमी संसार से इतनी "विपरीत" हैं कि वे अनुकूलन का चिह्न होने के बजाय, "घरेलू नियम-पट्टिका को उस बात के रूप में प्र-स्तुत किया गया है जो अंततः विश्वासियों की पहचान है"। जैसा शी-मिन लू (Shi-Min Lu) लिखती हैं, सही ढंग से पढ़ी जाएँ तो घरेलू नियम-पट्टिकाएँ केवल स्त्रियों को ही नहीं, बल्कि घर के सभी सदस्यों को रोमी संसार के "दम-नकारी तत्वों" से मुक्त करती हैं। पौलुस ने मसीहियों पर रोमी पितृसत्ता नहीं थोपी; पौलुस ने एक यीशु-रीमिक्स का उपयोग करके मसीहियों को बताया कि सुसमाचार उन्हें कैसे स्वतंत्र करता है।

तो आइए, पौलुस के दो मिलते-जुलते घरेलू नियम-पट्टिका अंशों के यीशु-रीमिक्स को देखें:

[कुलुस्सियों 3:18-19] **हे पत्नियो, अपने-अपने पति के अधीन रहो, जैसा प्रभु में उचित है। हे पतियो, अपनी-अपनी पत्नी से प्रेम रखो, और उनसे कठोरता न करो।**

[इफिसियों 5:21-22,25,28,33] **मसीह के भय से एक दूसरे के अधीन रहो। हे पत्नियो, अपने-अपने पति के ऐसे अधीन रहो जैसे प्रभु के। ... हे पतियो, अपनी-अपनी पत्नी से प्रेम रखो, जैसा मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम करके अपने आप को उसके लिए दे दिया, ... इसी प्रकार उचित है कि पति अपनी-अपनी पत्नी से अपनी देह के समान प्रेम रखे। ... पर तुम में से हर एक अपनी पत्नी से अपने समान प्रेम रखे, और पत्नी भी अपने पति का भय माने।**

आधुनिक मसीही होने के कारण हम तुरंत पुरुष का अधिकार सुनते हैं। हे पत्नियो, अपने पतियों के अधीन रहो। परंतु पौलुस के पहले श्रोताओं, पहली शताब्दी के मसीहियों ने तुरंत इसका उल्टा सुना होता। हे पतियो, अपनी पत्नियों से प्रेम रखो और उनसे कभी कठोर व्यवहार न करो। हे पतियो, अपनी पत्नियों से वैसे ही प्रेम रखो जैसे मसीह ने कलीसिया से प्रेम किया और अपने आप को उसके लिए दे दिया। मसीही घरेलू नियम-पट्टिकाओं का ज़ोर आज वही नहीं है जो रोमी संसार में था।

उदाहरण के लिए ईसा पूर्व चौथी शताब्दी के दार्शनिक अरस्तू (Aristoteles) को लीजिए। अपनी "राजनीति" (Politik) में अरस्तू ने वह लिखा जो पश्चिमी संस्कृति के सबसे प्रभावशाली घरेलू-नियम पाठों में से एक बनने वाला था। सुनिए, उसने क्या कहा:

गृह-प्रबंध के विषय में हमने देखा है कि उसके तीन भाग हैं – एक है दासों पर स्वामी का शासन ..., दूसरा पिता का, और तीसरा पति का। जैसा हमने देखा, पति और पिता पत्नी और बच्चों पर शासन करता है, दोनों स्वतंत्र हैं, परंतु शासन में अंतर है: बच्चों पर उसका शासन राजसी है, पत्नी पर संवैधानिक। क्योंकि यद्यपि प्रकृति के क्रम में अपवाद हो सकते हैं, फिर भी पुरुष स्वभाव से ही स्त्री की अपेक्षा शासन करने के अधिक योग्य है। ... [पुरुष और स्त्री के बीच] असमानता स्थायी है। ... पुरुष का साहस आज्ञा देने में दिखाई देता है, स्त्री का आज्ञा मानने में। ... सभी वर्गों को अपने-अपने विशेष गुणों से युक्त समझा जाना चाहिए; जैसा कवि स्त्रियों के विषय में कहता है: "मौन स्त्री की शोभा है, परंतु पुरुष की वैसी शोभा नहीं।"

क्या आप अंतर सुनते हैं? अरस्तू विशेष रूप से पुरुषों को लिखता है कि उन्हें कैसे शासन करना चाहिए और उन्हें शासन करने का अधिकार क्यों है। वह अधीनस्थों को बातचीत में शामिल नहीं करता। गृह-प्रबंध रोमी पुरुष का क्षेत्र है – स्वामी, पिता और पति के रूप में। यह वचन केवल पुरुषों को संबोधित है।

इसके विपरीत, मसीही घरेलू नियम-पट्टिकाएँ घर की कलीसिया के सभी लोगों को संबोधित करती हैं – पुरुषों, स्त्रियों, बच्चों और दासों को। हर कोई बातचीत में शामिल है। धर्मशास्त्री लूसी पेपियट (Lucy Peppiatt) लिखती हैं कि यही रोमी पितृसत्ता को भीतर से खोखला करने की मसीही प्रक्रिया की "कुंजी" है। क्योंकि मसीही घरेलू नियम-पट्टिकाएँ पुरुष मुखिया के संरक्षकत्व को मानकर चलने के बजाय रोमी घर के सभी सदस्यों को संबोधित करती हैं, "वे अपने भीतर उन सामान्य स्थानों का, जो पुरुषों, स्त्रियों, दासों और बच्चों को दिए जाते हैं, और उनसे रखी जाने वाली अपेक्षाओं का उलट-पुलट समेटे हुए हैं"। एक पुरुष को अधिकार देने के बजाय, जो अपने घर के लोगों की ओर से बोलता और कार्य करता है, मसीही घरेलू नियम-पट्टिकाएँ घर-परिवार के हर सदस्य को – जो मसीह में अपने विश्वास के द्वारा एक दूसरे से जुड़ा है – स्वयं सुनने और स्वयं कार्य करने का अधिकार देती हैं। यह रोमी पितृसत्तात्मक ढाँचे से एक क्रांतिकारी अंतर है। घर की कलीसिया का मसीही ढाँचा रोमी साम्राज्य के पितृसत्तात्मक संसार का प्रतिरोध करता है।

क्योंकि पौलुस का उद्देश्य पुरुष के अधिकार को उभारना नहीं था

मसीही घरेलू नियम-पट्टिकाएँ (Haustafeln) पुरुष के अधिकार को जिस ढंग से आकार देती हैं, उसे भी रोमी पितृसत्ता के खंडन के रूप में पढ़ा जा सकता है। अरस्तू (Aristoteles) ने पुरुष के अधिकार को उचित ठहराने के लिए लिखा। उसने पुरुषों और स्त्रियों के बीच स्थायी असमानता पर ज़ोर दिया: पुरुष का स्वभाव आज्ञा देना है, जबकि स्त्री का स्वभाव आज्ञा मानना है। मसीही घरेलू नियम-पट्टिकाएँ कुछ और करती हैं। कुलुस्सियों 3 में पौलुस घर-परिवार के विषय में अपने निर्देश सबसे पहले पत्नियों को संबोधित करके आरंभ करता है – उस पुरुष को नहीं, जिसके हाथ में संभवतः बागडोर है (जैसा अरस्तू करता है)। लूसी पेपियट (Lucy Peppiatt) और स्कॉट मैकनाइट (Scot McKnight) दोनों ज़ोर देते हैं कि पौलुस पुरुष की शक्ति और अधिकार को नहीं उभारता। इसके बजाय पौलुस ज़ोर देता है कि पत्नियाँ अधीन रहें, जैसा प्रभु में उचित है (इसलिए नहीं कि वे हीन हैं), और पति अपनी पत्नियों से प्रेम रखें और उनसे कठोर व्यवहार न करें। मैकनाइट लिखते हैं: "पत्नी को दिए गए निर्देश का आधार किसी पदानुक्रम में उसके पति के अधिकार, शक्ति, अगुवाई या स्थिति को बनाने के बजाय, उसका आधार

बिल्कुल अलग है: उसका आधार प्रभु की जीवन-शैली है।" मसीही घर की अगुवाई यीशु के हाथ में है, रोमी **paterfamilias** के हाथ में नहीं।

इसी प्रकार इफिसियों 5 को भी रोमी पितृसत्ता के प्रतिरोध के रूप में पढ़ा जा सकता है। बहुत से विद्वान तर्क देते हैं कि पौलुस घरेलू नियम-पट्टिका की अपनी पूरी चर्चा को पद 21 के अधीन रखता है: "मसीह के भय से एक दूसरे के अधीन रहो।" जब इस पद को इफिसियों की घरेलू नियम-पट्टिका के आरंभ में पढ़ा जाता है, तो यह सब कुछ बदल देता है। हाँ, पत्नियों को अधीन रहना है, परंतु पतियों को भी। स्त्रियों की हीनता पर ज़ोर देने के बजाय, इफिसियों 5 स्त्रियों की समानता को रेखांकित करता है – पद 22 में उन्हें अधीन रहने के लिए बुलाया गया है, ठीक वैसे ही जैसे पद 21 में उनके पतियों को अधीन रहने के लिए बुलाया गया है। मसीहियों को रोमी भीड़ का बस एक और हिस्सा बनाने के बजाय (जहाँ स्त्री की अधीनता पर ज़ोर दिया जाता है), पद 21 में एक दूसरे के अधीन रहना "उस जीवन-शैली की विशेषता है जो विश्वासियों को अविश्वासी संसार से अलग करती है"।

अपने क्रांतिकारी निहितार्थों के कारण, उन बाइबल-अनुवादों में जो पूरकतावादी (पदानुक्रमित) दृष्टिकोण को बनाए रखना चाहते हैं, पद 21 को पद 22 से अलग रखना पड़ता है।[3] English Standard Version (ESV) पद 21 को उस खंड के अंत में रखता है जिसका शीर्षक अनुवादकों ने "Walk in Love" रखा है। इससे पद 21 अगले खंड के आरंभ से अलग हो जाता है, जिसका शीर्षक है "पत्नियाँ और पति" और जो फिर पद 22 से आरंभ होता है: "हे पत्नियो, अपने-अपने पति के ऐसे अधीन रहो जैसे प्रभु के।" इस प्रकार ESV पद 22 में स्त्री की अधीनता को उभारने का चुनाव करता है, और उसे पद 21 में रोमी पितृसत्ता को भीतर से खोखला करने वाली पौलुस की बात से अक्षरशः अलग कर देता है।

ESV के अनुवादकों ने इफिसियों 5 में जो किया, वह मुझे पुरातत्ववेत्ता इयान मॉरिस (Ian Morris) की उस आलोचना की याद दिलाता है जो उन्होंने शास्त्रीय यूनान के एथेंस के पुरुषों के बारे में की है। मॉरिस लिखते हैं कि यह संयोग नहीं है कि पुरातत्ववेत्ताओं को प्राचीन एथेंस में स्त्रियों के बहुत कम भौतिक प्रमाण मिलते हैं। "स्त्रियाँ और दास अदृश्य रहते हैं," परंतु इसका कारण "पद्धति संबंधी समस्याएँ" या विद्वानों द्वारा प्रमाणों का गलत वर्गीकरण नहीं है। यूनानी नगर-राज्य की "असामान्य रूप से सर्वव्यापी पुरुष नागरिक-संस्कृति" ने स्त्रियों को केवल दबाया ही नहीं, बल्कि उन स्थानों पर भी इतना अच्छा नियंत्रण रखा जिनमें स्त्रियाँ रहती थीं, कि उनके बहुत कम निशान बचे हैं। स्त्रियाँ इसलिए अदृश्य रहती हैं क्योंकि "एथेंस के पुरुष नागरिक ऐसा ही चाहते थे"। इफिसियों 5 के ESV अनुवाद में स्त्रियों की अधीनता को उभारा गया है, और पतियों से अधीन रहने के आग्रह को हल्का कर दिया गया है – इसलिए नहीं कि पौलुस का यह अर्थ था, बल्कि इसलिए कि ESV के पूरकतावादी अनुवादक ऐसा ही चाहते थे।

इफिसियों 5:21 इस अध्याय में रोमी पितृसत्ता का एकमात्र क्रांतिकारी उलटाव नहीं है। पौलुस यह भी माँग करता है कि पुरुष अपनी पत्नियों से वैसे प्रेम रखें जैसे वे अपनी देह से प्रेम रखते हैं। क्या आप जानते हैं कि यूनानी-रोमी संसार में स्त्री की देह को एक अपूर्ण और विकृत पुरुष-देह माना जाता था? अपनी रचना "प्राणियों की उत्पत्ति के विषय में" (Über die Zeugung der Geschöpfe) में अरस्तू लिखता है कि "स्त्री मानो एक विकृत पुरुष है" और कि "क्योंकि स्त्री का स्वभाव अधिक दुर्बल और अधिक ठंडा है ... हमें स्त्री की अवस्था को मानो एक विकृति समझना चाहिए"। स्त्रियाँ अक्षरशः राक्षसी विकृतियाँ थीं। निस्संदेह अरस्तू ने स्वीकार किया कि स्त्री की यह विकृति एक "नियमित" और उपयोगी घटना थी। दूसरी शताब्दी ईस्वी में गैलेन (Galen) ने भी स्त्रियों को अपूर्ण पुरुष घोषित किया, जिनमें अपने जननांगों को बाहर की ओर धकेलने के लिए आवश्यक ऊष्मा की कमी थी। परंतु अरस्तू की तरह उसने भी माना कि यह अच्छा था कि विकृत पुरुष मौजूद थे, क्योंकि अन्यथा प्रजनन असंभव होता।

इसके विपरीत पौलुस स्त्री की देह के प्रति इस तिरस्कार में से कुछ भी नहीं दिखाता। वह घोषणा करता है कि पुरुषों की देह स्त्रियों की देह से अधिक मूल्यवान या अधिक योग्य नहीं है। स्त्रियाँ भी पुरुषों की तरह "पवित्र और निर्दोष" हो सकती हैं, और पुरुषों को स्त्री की देह से वैसे ही प्रेम रखना है जैसे वे अपनी पुरुष देह से प्रेम रखते हैं (इफिसियों 5:27-29)। मैं अपने विद्यार्थियों को बताती हूँ कि पौलुस का अध्ययन जॉन पाइपर (John Piper) के इस दावे का कितनी आसानी से खंडन कर देता है कि मसीही विश्वास का स्वरूप "पुरुषोचित" है। कोई सोच सकता है कि पौलुस अपने पुरुष-अधिकार पर गर्व करेगा, परंतु वह ऐसा नहीं करता। जैसा बेवर्ली रॉबर्ट्स गवेंटा (Beverly Roberts Gaventa) ने पाया है, पौलुस अपने पत्रों में सात बार उन कलीसियाओं के साथ, जिनकी स्थापना में उसका हाथ था, अपने संबंध का वर्णन करने के लिए माँ के चित्रों का उपयोग करता है। "आँकड़ों की दृष्टि से इसका अर्थ है कि पौलुस पिता के चित्रों की अपेक्षा माँ के चित्रों का अधिक बार उपयोग करता है – जो प्रभावशाली है, विशेषकर जब हम यह ध्यान में रखें कि पौलुस के पत्रों पर अधिकांश चर्चाओं में उनका व्यावहारिक रूप से कोई उल्लेख ही नहीं होता।" पौलुस स्वयं को – एक पुरुष प्रेरित को – गर्भवती माँ के रूप में, प्रसव-पीड़ा में पड़ी माँ के रूप में, और यहाँ तक कि दूध पिलाने वाली माँ के रूप में भी वर्णित करता है।

पौलुस न केवल स्त्री की देह को मूल्यवान मानता है, बल्कि वह "एक कुलपिता का अधिकार छोड़कर ऐसी भूमिका अपनाने के लिए भी तैयार है जो उसके लिए लज्जा लाएगी – स्त्री के रूप में पहचाने जाने वाले पुरुष की लज्जा"। पौलुस का संदेश कितना सुंदर, कितना क्रांतिकारी है! मैं कल्पना भी नहीं कर सकती कि पहली शताब्दी की कलीसियाओं की स्त्रियों को उसके शब्द कितने स्वागतयोग्य लगे होंगे। जो बात रोमी संसार में स्त्री की देह को दुर्बल बनाती थी, वही पौलुस के लेखों में उसे सबल बनाती थी। एक स्त्री का साहित्यिक रूप धारण करके पौलुस ने गलातियों 3:28 के अपने ही शब्दों के उस क्रांतिकारी दावे को साकार किया कि मसीह में "न पुरुष, न स्त्री" है।

मध्यकालीन मसीहियों ने पौलुस की मातृ-बिंबों वाली भाषा को उस ढंग से अपनाया, जैसे आधुनिक मसीही नहीं अपनाते। गवेंटा ध्यान दिलाती हैं कि बहुत कम आधुनिक विद्वानों ने पौलुस की चौंकाने वाली मातृ-बिंबों वाली भाषा पर ध्यान दिया है। इसके विपरीत इतिहासकार कैरोलिन वॉकर बायनम (Caroline Walker Bynum) बारहवीं शताब्दी में पुरुष पादरियों द्वारा प्रयुक्त मातृ-बिंबों की बारंबारता से इतनी प्रभावित हुईं कि उन्होंने युगांतरकारी अध्ययन Jesus as Mother: Studies in the Spirituality of the High Middle Ages लिखा। वे लिखती हैं: "मैं जो प्रश्न पूछना चाहती हूँ, वह यह है कि परमेश्वर और मसीह का, जिनका वर्णन सामान्यतः पुरुष के रूप में किया जाता है, वर्णन करने के लिए स्पष्ट और विस्तृत मातृ-बिंबों का उपयोग बारहवीं शताब्दी के सिस्टर्शियन (Zisterzienser) भिक्षुओं में इतना लोकप्रिय क्यों है।" वे कैंटरबरी के एन्सेल्म (Anselm von Canterbury) को – एक बेनेडिक्टाइन भिक्षु, जो स्त्रियों के प्रति अपने रवैये में कुछ पितृसत्तात्मक ही था – उन पहले मध्यकालीन पादरियों में से एक के रूप में पहचानती हैं जिन्होंने पौलुस की मातृ-बिंबों वाली भाषा को अपनाया। 1 थिस्सलुनीकियों 2:7 और गलातियों 4:19 में पौलुस के लेखों का स्पष्ट अनुसरण करते हुए एन्सेल्म लिखते हैं: "तू [पौलुस] मसीहियों के बीच एक धाय के समान है, जो न केवल अपने बच्चों की देखभाल करती है, बल्कि अपने अद्भुत प्रेम की चिंता के द्वारा उन्हें दूसरी बार जन्म भी देती है।" केवल इसलिए कि आधुनिक सुसमाचारवादी पौलुस द्वारा मातृ-बिंबों के क्रांतिकारी उपयोग को अनदेखा करते हैं, इसका अर्थ यह नहीं कि वे मौजूद नहीं हैं। इसका अर्थ केवल यह है कि हमने एक बार फिर पौलुस को गलत समझा है।

क्योंकि पौलुस की चिंता रोमी लिंग-पदानुक्रम नहीं था

एक और प्रमाण, जो मुझे विश्वास दिलाता है कि घरेलू नियम-पट्टिकाओं को रोमी पितृसत्ता के एक प्रकार के प्रति-रोध के रूप में पढ़ा जाना चाहिए, वह ढंग है जिससे रोमी संसार आरंभिक मसीहियों को देखता था: "लिंग-मर्यादा से भटके हुए लोगों" के रूप में। ओसिएक (Osiek) और मैकडोनल्ड (MacDonald) हमें याद दिलाती हैं कि छोटे प्लिनी (Plinius der Jüngere) ने दो मसीही स्त्रियों की यातना पर चर्चा करने के बाद, जिन्हें उसने सेविकाएँ (डी-कनेस) कहा, मसीही विश्वास को एक "भ्रष्ट और अतिवादी अंधविश्वास" कहा। वे लिखती हैं: "समूह में एक प्रकार की स्त्री-अगुवाई की ओर ध्यान खींचकर – पुरुष अगुवों के किसी भी उल्लेख को छोड़ते हुए – प्लिनी ने संकेत दिया कि पौरुष के आदर्श खतरे में थे। नियंत्रण स्त्रियों के हाथ में था।" और रोमी दृष्टि से यह लज्जाजनक था। आरं-भिक मसीही न केवल स्त्रियों को अगुवाई की भूमिकाओं में रखते थे; वे बराबरी से भी मिलते थे – पुरुष, स्त्रियाँ, बच्चे और दास – घर के निजी दायरे में, जो परंपरागत रूप से स्त्रियों का स्थान था। मसीही विश्वास मानदंड से भटका हुआ और अनैतिक था, क्योंकि उसे रोमी पौरुष के आदर्शों को खोखला करने वाला माना जाता था। मसीही विश्वास प्लिनी को घृणित लगता था क्योंकि वह रोमी घरेलू नियमों का पालन नहीं करता था – इसलिए नहीं कि वह उनका पालन करता था।

बहुत से आधुनिक मसीहियों के लिए घरेलू नियम-पट्टिकाएँ ही वह चीज़ हैं जो हमें संसार से अलग करती हैं। जबकि, जैसा बहुत से लोग मानते हैं, हमारे चारों ओर नारीवाद अराजकता मचा रहा है, सुसमाचारवादी कलीसिया जल की धाराओं के किनारे लगाए गए एक सुव्यवस्थित वृक्ष की तरह खड़ी है – दृढ़ और शांत, शाखाओं के एक पदानुक्रम के साथ। वास्तव में बात वैसी ही है जैसी जॉन पाइपर और वेन ग्रूडम (Wayne Grudem) ने Recovering Biblical Manhood and Womanhood में कही है। भूमिका में वे लिखते हैं: "हम मसीहियों को पुरुषत्व और स्त्रीत्व की उस उदात्त दृष्टि को फिर से पाने में सहायता करना चाहते हैं, जैसी परमेश्वर ने उन्हें सृजा है। ... हम आशा करते हैं कि यह नई दृष्टि – बाइबल आधारित 'पूरकता' की दृष्टि – पिछली भूलों को सुधारेगी भी, और उन विपरीत भूलों से भी बचाएगी जो परमेश्वर द्वारा दिए गए लिंग-भेदों को नारीवादी ढंग से धुँधला करने से उत्पन्न होती हैं।" बस, पहली शताब्दी में पौलुस का संसार रोमी लिंग-पदानुक्रम को "नई दृष्टि" के रूप में न दे-खता। पौलुस की घरेलू नियम-पट्टिकाओं में झलकने वाला रोमी पितृसत्तात्मक ढाँचा "नई दृष्टि" नहीं था। **paterfamilias की शक्ति को स्वीकार करना तो रोमी संसार पहले से ही कर रहा था। पितृसत्ता वह चीज़ नहीं थी जो मसीहियों को अलग बनाती थी; वह तो वह चीज़ थी जो उन्हें बाकी सबके जैसा बनाती थी।**

नए नियम की घरेलू नियम-पट्टिकाएँ एक कहानी सुनाती हैं कि आरंभिक कलीसिया ने एक गैर-मसीही और बढ़ते हुए शत्रुतापूर्ण संसार में जीने का प्रयास कैसे किया। उन्हें उसमें घुल-मिलकर रहना था, परंतु उन्हें मसीह के सुस-माचार को भी ऊँचा उठाए रखना था। उन्हें रोमी पितृसत्ता के ढाँचे को जहाँ तक संभव हो बनाए रखना था, परंतु उन्हें परमेश्वर के स्वरूप में सृजे गए हर मनुष्य के मूल्य और गरिमा को भी ऊँचा उठाए रखना था। पौलुस ने उन्हें रोमी पितृसत्ता के एक रीमिक्स के नक्शे दिए। पुरुषों को प्रमुख अधिकारी मानकर उन्हें संबोधित करने के बजाय, मसीही घरेलू नियम-पट्टिकाएँ हर किसी को बातचीत में शामिल करती हैं। पुरुष के अधिकार को स्त्री की हीनता से उचित ठहराने के बजाय, मसीही घरेलू नियम-पट्टिकाएँ स्त्रियों को पुरुषों के समान मूल्य का घोषित करती हैं। पत्नी की अधीनता पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय (यह तो सब करते थे), मसीही घरेलू नियम-पट्टिकाएँ पति से ठीक उसका उल्टा माँगती हैं जिसकी रोमी कानून अनुमति देता था: अपनी पत्नी के जीवन पर शक्ति चलाने के बजाय उसके लिए अपना जीवन बलिदान करना। पेपियट लिखती हैं कि यही "मसीही क्रांति" है। यही वह बात है जो मसीहियों को हमारे आसपास के संसार से अलग करती है।

क्या ऐसा हो सकता है कि हमने पौलुस को ठीक उल्टा समझा है? **क्या हो, यदि उसका ध्यान कभी पुरुष के सिर होने और स्त्री की अधीनता पर था ही नहीं? क्या हो, यदि उसकी दृष्टि उससे कहीं बड़ी थी जितनी हमने कल्पना की है? क्या हो, यदि पौलुस किसी प्राचीन लिंग-पदानुक्रम की नकल करने के बजाय हमें यह दिखाना चाहता था कि मसीही सुसमाचार रोमी घर को भी कैसे स्वतंत्र करता है?**

कुछ वर्ष पहले मेरे पति हमारे हाई स्कूल के बहुत से किशोरों के साथ शहर से बाहर एक शिविर में गए हुए थे। जो व्यक्ति सामान्यतः युवाओं की संडे स्कूल कक्षा लेते थे – जिसमें वे सब बच्चे आते थे जो उस सप्ताहांत शिविर में नहीं गए थे – उन्होंने बीमार होने की सूचना दी। मैं ही एकमात्र उपलब्ध विकल्प थी। मेरे लिए यह ठीक था। मुझे पढ़ाना बहुत प्रिय है, और उस समय मैं अपनी क्षमता के शिखर पर थी। हर सप्ताह मैं न केवल बेलर विश्वविद्यालय में स्नातक (अंडरग्रेजुएट) की छह कक्षाएँ पढ़ाती थी, बल्कि बुधवार शाम को हाई स्कूल की लड़कियों को भी पढ़ाती थी, और उन स्नातकोत्तर विद्यार्थियों, स्नातक विद्यार्थियों और किशोरों को भी, जिनसे मैं एक मार्गदर्शिका के रूप में मिलती थी। पढ़ाना, बिना तैयारी के भी, मेरा दूसरा स्वभाव बन चुका था।

परंतु हमारी कलीसिया के अगुवों ने स्पष्ट कर दिया था कि स्त्रियाँ पुरुषों को नहीं पढ़ा सकतीं, बस। और उनके लिए पुरुषत्व तेरह वर्ष की आयु से आरंभ होता था। इसलिए मुझे पास्टर को फ़ोन करना पड़ा। मुझे स्थिति समझानी पड़ी और विशेष अनुमति माँगनी पड़ी, ताकि किशोर लड़कों और लड़कियों से भरी एक कक्षा में एक पुरुष शिक्षक की जगह ले सकूँ। एक लंबे विराम के बाद मुझसे कहा गया कि यह ठीक है, बशर्ते मैं केवल पिछले सप्ताह के उपदेश के प्रश्नों पर चर्चा करवाऊँ और संचालिका के रूप में काम करूँ – शिक्षिका के रूप में नहीं। बस धन्यवाद कहकर फ़ोन रख देने के लिए मुझे अपने आप पर पूरा ज़ोर लगाना पड़ा।

मुझे यकीन है, इसमें कुछ हिस्सा मेरे अभिमान का था। यहाँ मैं थी, एक बड़े शोध-विश्वविद्यालय से डॉक्टरेट वाली प्रोफ़ेसर (मेरा दूसरा विषय धर्म-विज्ञान है), और मुझसे कहा जा रहा था कि मैं हाई स्कूल की संडे स्कूल कक्षा नहीं पढ़ा सकती। हाँ, इससे मेरे अभिमान को ठेस पहुँची। परंतु मेरी नाराज़गी का यही एकमात्र कारण नहीं था। इसका एक कारण यह भी था कि मैं मानती थी कि पास्टर गलत थे। **मुझे पढ़ाने की अनुमति नहीं थी क्योंकि वे मानते थे कि पौलुस ने स्त्रियों से कहा था कि वे चुप रहें और पुरुषों पर अधिकार न चलाएँ। क्या हो, यदि पौलुस ने ऐसा कभी कहा ही न हो? क्या हो, यदि घरेलू नियम-पट्टिकाओं की ही तरह हमने पौलुस को बस इसलिए गलत समझा है कि हम उसका रोमी संदर्भ भूल गए? क्या हो, यदि हमने अपने आसपास के मूर्तिपूजक संसार के विरुद्ध पौलुस के खंडनों को पौलुस के अपने शब्द समझ लिया है?**

क्योंकि पौलुस ने स्त्रियों से यह नहीं कहा कि वे चुप रहें

क्योंकि मैं इतिहासकार हूँ, मैं जानती हूँ कि पौलुस के पत्रों में उससे अधिक है जो उसके शब्द कहते हैं। पौलुस उन कलीसियाओं को लिख रहा था जिन्हें वह भली-भाँति जानता था। वह उन्हें जानता था। 1 कुरिन्थियों के विषय में गवेंटा हमें याद दिलाती हैं: "ये प्रश्न शून्य से उत्पन्न नहीं होते।" पौलुस उनके संघर्षों को, उनके लोगों को, उपद्रव करने वालों को जानता था। पौलुस के संदेश की मूल बातें समझने के लिए हमें इतिहास में गहरे उतरने की आवश्यकता नहीं है। हम पहचान सकते हैं कि कुरिन्थुस की कलीसिया में (एक उदाहरण के रूप में) विभिन्न आत्मिक वरदानों के मूल्य को लेकर एक होड़ उत्पन्न हो गई थी। शायद हम प्रत्यक्ष रूप से विवरण न जानें – कौन घमंडी हो गया था और कौन भविष्यद्वाणी को अन्य भाषाओं में बोलने से बढ़कर मानता था – परंतु हम जानते हैं कि पौलुस ने उन्हें कैसे सुधारा: उनके सब वरदान एक ही आत्मा से आते हैं, उनके सब वरदान एक ही देह के भीतर काम करते

हैं, और उनका कोई भी वरदान स्वतंत्र रूप से कार्य नहीं करता। हम पौलुस का संदेश स्पष्ट सुनते हैं: मसीह की देह में हम सब समान रूप से महत्वपूर्ण हैं। दो हज़ार से अधिक वर्षों की दूरी उसके अर्थ को धुँधला नहीं करती।

और फिर भी, यदि हम पौलुस के पत्रों के ऐतिहासिक संदर्भ की उपेक्षा करें, तो हम उसके अर्थ को विकृत कर सकते हैं और उसके छोटे-छोटे टीलों को पहाड़ बना सकते हैं। इसका एक उत्कृष्ट उदाहरण 1 कुरिन्थियों 14:33-36 है: "जैसे पवित्र लोगों की सब कलीसियाओं में, वैसे ही स्त्रियाँ सभाओं में चुप रहें, क्योंकि उन्हें बोलने की अनुमति नहीं है, परंतु वे अधीन रहें, जैसा व्यवस्था भी कहती है। यदि वे कुछ सीखना चाहें, तो घर में अपने-अपने पति से पूछें; क्योंकि स्त्री का सभा में बोलना लज्जा की बात है। क्या परमेश्वर का वचन तुम में से निकला? या केवल तुम ही तक पहुँचा?"

पौलुस घोषित करता है कि स्त्रियाँ चुप रहें, अधीन रहें और अपने पतियों के आत्मिक अधिकार पर निर्भर रहें। क्या यह सही है? यह अंश आधुनिक सुसमाचारवादियों के लिए एक बड़ा पहाड़ बन गया है – मेरे विचार में पौलुस ने जितना कभी चाहा होगा, उससे कहीं अधिक ज़ोर इस पर दिया जाता है। यह पूरकतावादी शिक्षाओं का एक आधारभूत पाठ बन गया है। आइए देखें कि रोमी इतिहास की बेहतर समझ इस अंश की हमारी व्याख्या के ढंग को कैसे बदल सकती है।

ईसा पूर्व 215 में एक पराजित और आर्थिक तंगी से जूझते रोम ने एक नया कानून पारित किया। इसकी पृष्ठभूमि रोम की अब तक की सबसे बड़ी सैन्य पराजय थी। एक वर्ष पहले, 2 अगस्त को, कार्थेज के सेनापति हैनिबल (Hannibal) ने दूसरे प्यूनिक युद्ध में कैनी (Cannae) के पास रोमी सेना का विनाश कर दिया था। स्रोत बताते हैं कि उस दिन पचास हज़ार से सत्तर हज़ार के बीच रोमी सैनिक मारे गए। यह द्वितीय विश्वयुद्ध की कुछ सबसे रक्त-रंजित लड़ाइयों से भी अधिक है। पहली शताब्दी के रोमी इतिहासकार लिवी (Livius) ने कहा: "निश्चय ही कोई और राष्ट्र ऐसा नहीं है जो विपत्ति के ऐसे बोझ के नीचे टूट न गया होता।" बस, रोम दूसरे राष्ट्रों जैसा नहीं था (और लिवी ठीक यही कहना चाहता था)। रोम टूटा नहीं। रोमियों ने कमर कसी, एक नई सेना खड़ी की और आगे बढ़ते रहे। रोम दृढ़ संकल्प का साक्षात रूप था।

मेरे विद्यार्थी जानते हैं कि मुझे शुद्ध सैन्य इतिहास पसंद नहीं। इसलिए जब मैं ऐसी कोई कहानी सुनाने लगती हूँ, तो वे जानते हैं कि जल्द ही स्त्रियाँ भी कहानी में आएँगी। और वे आती हैं। रोम के मितव्ययिता उपायों के कारण स्वतंत्र, धनी स्त्रियों के एक बढ़ते हुए समूह पर कड़ी कार्रवाई हुई – वे पत्नियाँ और बेटियाँ, जिन्हें पुरुष संरक्षकों की अचानक कमी से लाभ हुआ था। रोम ने संभवतः दो कारणों से ऐसा किया (इतिहासकार अब भी इस पर बहस करते हैं)। एक कारण निश्चय ही युद्ध के प्रयास थे। रोम को सबसे धन चाहिए था। इसलिए उन्होंने ओपियन कानून (Lex Oppia) पारित किया। स्त्रियों को अब विलासितापूर्ण वस्त्र पहनने, (रोम में) विशेष अवसरों को छोड़कर बग्घियों में सवारी करने, या आधे औंस से अधिक सोना रखने की अनुमति नहीं थी। कुछ को तो युद्धकाल में मिली अपनी विरासत भी राज्य को सौंपनी पड़ी। इन स्त्रियों से अपेक्षा की गई कि वे रोम के लिए अधिक और अपने लिए कम धन खर्च करें।

दूसरा कारण, जिसके लिए रोम ने संभवतः ओपियन कानून बनाया, स्त्रियों द्वारा धन के सार्वजनिक प्रदर्शन को सीमित करना था। कैनी की लड़ाई के बाद रोम शोक में था। यह उत्सव मनाने और भड़कीले वस्त्र पहनने का समय नहीं था। यह सब दरवाज़े बंद करके मृत्यु तक लड़ने का समय था (और कुल मिलाकर उन्होंने ऐसा ही किया)। सबसे बढ़कर यह ऐसा समय नहीं था जिसमें स्त्रियों के पास पुरुषों से अधिक धन हो। जैसा हम पहले देख चुके हैं, रोम एक पितृसत्तात्मक समाज था, और रोमी गृहस्वामिनियाँ (मैट्रन) – विवाहित स्त्रियाँ, जो अपने पतियों के संरक्षण

में थीं – रोमी समाज की सफलता का प्रतीक थीं। पुरुष के मार्गदर्शन से मुक्त, स्वतंत्र और धनी स्त्रियाँ ऐसा प्रतीक नहीं थीं।

वैसे, रोम जीत गया।

परंतु जब संकट समाप्त हो गया, तो स्त्रियों के धन को सीमित करने वाला कानून बना रहा, जबकि पुरुषों के धन को सीमित करने वाले कानून रद्द कर दिए गए। ईसा पूर्व 195 के आसपास रोम की स्त्रियों का धैर्य जवाब दे गया। उन्होंने विरोध किया, सड़कों को और यहाँ तक कि फ़ोरम तक जाने वाले रास्तों को भी रोक दिया, और कानून को रद्द करने की माँग की।

एक कौंसल (Konsul), बड़े काटो (Cato der Ältere), कानून को रद्द करने के विरुद्ध था। सुनिए उसने क्या कहा, और ध्यान रखिए कि लिवी ने उसका भाषण संभवतः सीज़र ऑगस्टस (Caesar Augustus) के शासनकाल (ईसा पूर्व 27 से ईस्वी 14 तक) में लिपिबद्ध किया:

घर में हमारी स्वतंत्रता स्त्रियों के उन्माद से पराजित हो जाती है, यहाँ फ़ोरम में उसे पैरों तले रौंदा जाता है, और क्योंकि हमने एक-एक को लगाम में नहीं रखा, अब हम सबसे एक साथ डरते हैं। ... सचमुच, जब मैं हाल ही में स्त्रियों की एक भीड़ के बीच से होकर गुज़रा, तो मैं लज्जा से लाल हो गया। ... मुझे कहना चाहिए था: "यह कैसा आचरण है? सार्वजनिक स्थानों पर घूमना, सड़कें रोकना और दूसरी स्त्रियों के पतियों से बातें करना! क्या तुम घर पर अपने ही पतियों से यही बात नहीं पूछ सकती थीं? क्या तुम सार्वजनिक स्थान पर दूसरों के पतियों के साथ उससे अधिक मनमोहक हो, जितनी घर पर अपने पतियों के साथ? और फिर भी, घर पर भी तुम्हें यह शोभा नहीं देता कि तुम इस बात की चिंता करो कि यहाँ कौन से कानून पारित या रद्द किए जाते हैं।" हमारे पूर्वज नहीं चाहते थे कि स्त्रियाँ कोई भी – निजी तक – मामला किसी संरक्षक के बिना चलाएँ; वे चाहते थे कि स्त्रियाँ माता-पिता, भाइयों या पतियों के अधिकार के अधीन रहें; हम (देवता हमारी सहायता करें!) अब उन्हें शासन की लालसा करने और फ़ोरम तथा हमारी सभाओं में दख़ल देने दे रहे हैं। यदि वे ट्रिब्यूनों (Tribunen) को कानून रद्द करने के पक्ष में मत देने के लिए नहीं मना रहीं, तो अब वे सड़कों और चौराहों पर क्या कर रही हैं? ... यदि वे अब जीत गईं, तो वे और क्या-क्या करने का प्रयास नहीं करेंगी? जैसे ही वे तुम्हारी बराबरी करने लगेंगी, वे तुमसे श्रेष्ठ हो जाएँगी।

लिवी ने काटो के इस भाषण को रोम के अपने इतिहास में दर्ज किया। छोटे प्लिनी, जिसने पहली शताब्दी के अंत में लिखा, लिवी को एक प्रसिद्ध व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत करता है। लिवी एक लोकप्रिय लेखक था, और उसका इतिहास बहुत प्रसिद्ध रहा होगा। इसलिए एक इतिहासकार के रूप में मुझे आश्चर्य नहीं होता कि नए नियम में लिवी की गूँज सुनाई देती है। 1 कुरिन्थियों 14:34-35 को फिर से सुनिए: "स्त्रियाँ कलीसियाओं में चुप रहें। क्योंकि उन्हें बोलने की अनुमति नहीं है, परंतु वे अधीन रहें, जैसा व्यवस्था भी कहती है। यदि वे कुछ जानना चाहें, तो घर में अपने-अपने पति से पूछें। क्योंकि स्त्री का कलीसिया में बोलना लज्जा की बात है।" नहीं, यह शब्दशः वही नहीं है। परंतु बहुत निकट है। एक स्पष्ट गूँज। दूसरे शब्दों में: पौलुस यहाँ अपने रोमी परिवेश से सामग्री ले रहा है।

काटो का भाषण अकेला रोमी पाठ नहीं है जो स्त्रियों के प्रति यह दृष्टिकोण व्यक्त करता है। नए नियम के विद्वान चार्ल्स टालबर्ट (Charles Talbert) हमें याद दिलाते हैं कि जुवेनल (Juvenal) (दूसरी शताब्दी ईस्वी का आरंभ) भी अपने छठे व्यंग्य-काव्य (Satire) में उन स्त्रियों की निंदा करता है जो घर पर रहने के बजाय सार्वजनिक स्थानों पर घूमती हैं और पुरुषों के शासन-कार्यों में दख़ल देती हैं। रोमी संसार स्त्रियों को पुरुष के अधीन मानता था। रोमी संसार घोषित करता था कि स्त्रियों के सार्वजनिक स्थानों पर घूमने के बजाय, पुरुष घर पर अपनी पत्नियों तक जानकारी पहुँचाएँ। रोमी संसार स्त्रियों को आदेश देता था कि वे सार्वजनिक मंचों पर चुप रहें।

पौलुस एक शिक्षित रोमी नागरिक था। वह उस समय की प्रचलित वक्तृत्व-पद्धति से परिचित रहा होगा, जिसमें किसी गलत धारणा को सुधारने के लिए पहले उसे उद्धृत किया जाता था और फिर उसका खंडन किया जाता था। पौलुस 1 कुरिन्थियों 6 और 7 में अपने इन उद्धरणों के साथ यही करता है: "सब वस्तुएँ मेरे लिए उचित हैं", "भोजन पेट के लिए और पेट भोजन के लिए है" और "पुरुष के लिए अच्छा है कि वह स्त्री को न छूए"। इन उदाहरणों में पौलुस मूर्तिपूजक संसार के गलत विचारों को उद्धृत करता है, जैसे "सब वस्तुएँ मेरे लिए उचित हैं"। फिर पौलुस उन्हें काफ़ी बदल देता है। पौलुस स्त्रियों के विषय में अपने समय के विचारों से परिचित रहा होगा, जिनमें लिवी (Livius) का यह विचार भी शामिल है कि स्त्रियाँ सार्वजनिक रूप से चुप रहें और घर पर अपने पतियों से जानकारी प्राप्त करें। जैसा लूसी पेपियट (Lucy Peppiatt) ने तर्क दिया है, क्या यह संभव नहीं कि पौलुस 1 कुरिन्थियों 11 और 14 में वही कर रहा है जो वह 1 कुरिन्थियों 6 और 7 में करता है? बुरी प्रथाओं का खंडन – पहले उन बुरी प्रथाओं को उद्धृत करके और फिर उन्हें सुधारकर? पेपियट लिखती हैं: "कुरिन्थियों को लिखे पत्र में स्त्रियों पर लगे प्रतिबंध इस बात के उदाहरण हैं कि कुरिन्थी लोग अपनी सांस्कृतिक अपेक्षाओं और मूल्यों के अनुरूप, पौलुस की शिक्षाओं के विपरीत, स्त्रियों के साथ कैसा व्यवहार करते थे।"

क्या हो, यदि पौलुस इस बात से इतना चिंतित था कि कुरिन्थुस के मसीही स्त्रियों पर अपनी सांस्कृतिक पाबंदियाँ थोप रहे थे, कि उसने उनसे इस विषय में बात की? उसने उस बुरी प्रथा को उद्धृत किया जिसे कुरिन्थुस के पुरुष रोमी संसार से अपने मसीही संसार में खींच लाना चाहते थे, और फिर उसका विरोध किया। Revised Standard Version (RSV) इस धारणा का समर्थन करता है कि पौलुस ने ठीक यही किया। पौलुस पहले सांस्कृतिक पाबंदियों को सामने रखता है: "जैसे पवित्र लोगों की सब कलीसियाओं में, वैसे ही स्त्रियाँ भी कलीसियाओं में चुप रहें। क्योंकि उन्हें बोलने की अनुमति नहीं है, परंतु वे अधीन रहें, जैसा व्यवस्था भी कहती है। यदि वे कुछ जानना चाहें, तो घर में अपने-अपने पति से पूछें। क्योंकि स्त्री का कलीसिया में बोलना लज्जा की बात है" (1 कुरिन्थियों 14:33-35)। और फिर पौलुस हस्तक्षेप करता है: "क्या! क्या परमेश्वर का वचन तुम में से निकला, या तुम ही अकेले हो जिन तक वह पहुँचा? यदि कोई अपने आप को भविष्यद्वक्ता या आत्मा से भरा हुआ समझे, तो वह मान ले कि जो बातें मैं तुम्हें लिखता हूँ, वे प्रभु की आज्ञा हैं। यदि कोई इसे न माने, तो वह भी माना नहीं जाता। इसलिए, हे मेरे भाइयो, भविष्यद्वाणी करने की धुन में रहो, और अन्य भाषा बोलने से मना न करो; परंतु सब बातें शालीनता और व्यवस्थित रीति से हों" (पद 36-40)।

मैं कक्षा में अक्सर यह अभ्यास करवाती हूँ। मैं किसी विद्यार्थी से उसके अपने अनुवाद से पढ़वाती हूँ, सामान्यतः ESV या NIV से। फिर मैं RSV से पढ़ती हूँ और शब्दों पर उसके अनुसार ज़ोर देती हूँ। जब मैं फिर ऊँचे स्वर में कहती हूँ: "क्या! क्या परमेश्वर का वचन तुम में से निकला?", तो अक्सर पूरी कक्षा की साँस थमती हुई सुनाई देती है। एक बार एक छात्रा ज़ोर से बोल उठी: "डॉ. बार! इससे तो सब कुछ बदल जाता है!" हाँ, मैंने उससे कहा, ऐसा ही है।

यदि 1 कुरिन्थियों 14:34-35 को कुरिन्थुस की एक प्रथा को प्रस्तुत करने वाले उद्धरण के रूप में पढ़ा जाए (जिसके पक्ष में डी. डब्ल्यू. ओडेल-स्कॉट (D. W. Odell-Scott) ने 1983 में, चार्ल्स टालबर्ट (Charles Talbert) ने 1987 में [अनुवादक की टिप्पणी: थॉमस शिर्माखर (Thomas Schirrmacher) ने भी 1991 में, और कैथरीन बुशनेल (Katharine Bushnell) ने 100 वर्ष पहले ही] और हाल ही में पेपियट ने फिर से तर्क दिया है), तो पौलुस का उद्देश्य स्पष्ट प्रतीत होता है: यह पहचानना कि कुरिन्थी क्या कर रहे थे ("स्त्रियाँ चुप रहें"), और स्पष्ट करना कि मसीहियों को कुरिन्थुस की प्रथा का पालन नहीं करना चाहिए ("क्या!")। यद्यपि मैं गारंटी नहीं दे सकती कि पौलुस ने यही किया, फिर भी (ऐतिहासिक रूप से) यह बहुत अर्थपूर्ण है। 1 कुरिन्थियों में पहले से ही कई ऐसे उद्धरण हैं

जो पौलुस के अपने नहीं हैं, और पद 34-35 का शब्द-विन्यास रोमी स्रोतों के उल्लेखनीय रूप से निकट है। मार्ग मोव्क्को (Marg Mowczko) टिप्पणी करती हैं: "यह विचार कि 14:34-35 पौलुस का अपना कथन नहीं, बल्कि एक उद्धरण है, उन थोड़े से विचारों में से है जो इस बात की विश्वसनीय व्याख्या देते हैं कि पद 34-35 पाठ में स्वर का अचानक परिवर्तन क्यों लाते हैं, और उसके बाद पद 36 में विषय, स्वर और लिंग का अचानक परिवर्तन क्यों होता है"। यदि पौलुस वास्तव में रोमी विश्वदृष्टि को इसलिए उद्धृत करता है कि उसके सामने मसीही विश्वदृष्टि रखे, तो उसका अर्थ ठीक उसके विपरीत है जो सुसमाचारवादी स्त्रियों को सिखाया गया है।

क्या ऐसा हो सकता है कि पौलुस, रोमी संसार की तरह स्त्रियों से चुप रहने को कहने के बजाय, वास्तव में पुरुषों से यह कहना चाहता था कि यीशु के संसार में स्त्रियों को बोलने की अनुमति है? क्या ऐसा हो सकता है कि हम (एक बार फिर) वह बात चूक गए हैं जो पौलुस कहना चाहता था? उसकी डाँट को मन में उतारकर स्त्रियों को बोलने देने के बजाय, क्या हम ठीक उन्हीं पितृसत्तात्मक प्रथाओं को जारी रख रहे हैं जिनकी पौलुस ने निंदा की थी?

एक इतिहासकार के रूप में मेरे लिए इस बात को अनदेखा करना कठिन है कि पौलुस के शब्द उस यूनानी-रोमी संसार से कितने मिलते-जुलते हैं जिसमें वह रहता है। फिर भी, यदि मैं गलत हूँ और पौलुस रोमी स्रोतों को जानबूझकर खंडन के उद्देश्य से उद्धृत करने के बजाय केवल उनका सहारा ले रहा है, तब भी मैं यही तर्क दूँगी कि पौलुस ने कुरिन्थुस की स्त्रियों को जो निर्देश दिए, वे उनके ऐतिहासिक संदर्भ तक सीमित हैं। क्यों? क्योंकि विरोधाभास-रहित होना अच्छी व्याख्या का एक गुण है (अर्थात् पूरे अध्याय, पूरे पत्र और पूरे नए नियम के कथनों का आपस में मेल)। पौलुस कोई सर्वव्यापी आदेश जारी नहीं करता कि स्त्रियाँ चुप रहें; वह अपने सभी पत्रों में स्त्रियों को बोलने की अनुमति देता है (1 कुरिन्थियों 11:1-6 इसका एक अच्छा उदाहरण है)। पौलुस स्त्रियों की अगुवाई को सीमित नहीं करता; वह स्वयं हमें बताता है कि आरंभिक कलीसिया में स्त्रियाँ अगुवाई करती थीं और वह उनकी सेवाओं का समर्थन करता है (रोमियों 16 पर मैं अगले खंड में चर्चा करूँगी)। एक कठोर लिंग-पदानुक्रम को स्थापित करना पौलुस की चिंता है ही नहीं। जैसा बेवर्ली रॉबर्ट्स गवेंटा (Beverly Roberts Gaventa) 1 कुरिन्थियों के एक पहले अंश (12:1-7) के संदर्भ में हमें याद दिलाती हैं, पौलुस की "सेवा के लिए बुलाहट लिंग के आधार पर सीमित नहीं है, इसलिए पूरकता के विषय में तर्कों को यहाँ कोई आधार नहीं मिलता"। **इस बात पर अड़े रहकर कि पौलुस ने स्त्रियों को चुप रहने की आज्ञा दी, सुसमाचारवादियों ने एक बार फिर पितृसत्तात्मक संस्कृति के आगे घुटने टेक दिए हैं। अरस्तू (Aristoteles) को उठाकर फेंक देने के बजाय (जिसके लिए रेचल हेल्ड इवांस (Rachel Held Evans) ने एक बार हमें प्रोत्साहित किया था), हमने मसीह में उस स्वतंत्रता को उठाकर फेंक दिया है जिसे पौलुस हमें देने का इतना प्रयास कर रहा था।**

क्योंकि पौलुस के यहाँ बाइबल की स्त्रियाँ स्त्रियों की हमारी "बाइबल आधारित" छवि के अनुसार नहीं चलतीं

अंततः रोमियों 16 में पौलुस की स्त्रियों ने ही मेरा मन बदला।

मुझे वह रविवार अब भी याद है जब बात मेरी समझ में आई। उपदेश के बाद मैं बेचैन थी। इतनी बेचैन कि मैंने बर्तन धोने शुरू कर दिए। दोपहर के भोजन की थालियाँ रगड़ते हुए बहता पानी मेरे मन को शांत कर रहा था। मेरे पति जानते थे कि कुछ ठीक नहीं है (बर्तन धोना एक स्पष्ट संकेत था)। वे रसोई में आए। उन्होंने एक शब्द नहीं कहा। आख़िरकार मैं बोली: "मैं नहीं मानती कि पुरुष सिर है।" वे रसोई के काउंटर से टिककर खड़े हो गए। मैं

उनकी ओर देख नहीं पा रही थी। कुछ और समय बीता, और फिर उन्होंने पूछा: "तुम नहीं मानतीं कि पुरुष घर के आत्मिक अगुवे होने के लिए बुलाए गए हैं?" मैंने सिर हिलाया। "नहीं।" वे एक मिनट और वहीं खड़े रहे, और फिर बस "ठीक है" कहकर चले गए। मैं जानती थी कि वे इस बात में मुझसे सहमत नहीं थे – वे एक पूरकतावादी कलीसिया में बड़े हुए थे और एक पूरकतावादी सेमिनरी में पढ़े थे। फिर भी वे सुनने और एक अलग धर्मवैज्ञानिक दृष्टिकोण पर विचार करने को तैयार थे। उस दिन उन्होंने मुझ पर जो भरोसा दिखाया, उसके लिए मैं सदा आभारी हूँ।

वास्तव में वह उपदेश नहीं था जिसने पानी सिर से ऊपर कर दिया, यद्यपि मुझे याद है कि वह पुरुषों की अगुवाई के बारे में था। जिस बात ने पानी सिर से ऊपर किया, वह स्त्रियों के इतिहास पर अपने पाठ्यक्रम में हाल ही में दिया गया मेरा एक व्याख्यान था। हम आरंभिक कलीसिया में स्त्रियों के बारे में बात कर रहे थे, जब हम कालक्रम के अनुसार प्राचीन संसार से मध्य युग की ओर बढ़ रहे थे। अचानक मन में आया और मैंने एक विद्यार्थी से कहा कि वह अपनी बाइबल खोलकर रोमियों 16 ऊँचे स्वर में पढ़े (एक मसीही विश्वविद्यालय में मैं सदा भरोसा कर सकती हूँ कि कम से कम एक विद्यार्थी के हाथ में बाइबल होगी)। मैंने कक्षा से कहा कि वे सुनें और जो भी स्त्री-नाम सुनें, उसे लिख लें।

वह शिक्षण का एक प्रभावशाली क्षण था – विद्यार्थियों के लिए भी और मेरे लिए भी। मैं जानती थी कि ये पद स्त्रियों से भरे हैं, परंतु मैंने कभी उनके नाम एक-एक करके ऊँचे स्वर में पढ़े जाते हुए नहीं सुने थे।

फीबे, सेविका (डीकन), जो पौलुस का पत्र लेकर गई और उसे अपनी घर की कलीसिया में ऊँचे स्वर में पढ़कर सुनाया।

प्रिस्का (प्रिस्किल्ला), जिसका नाम उसके पति के नाम से पहले लिया गया है (रोमी संसार में यह काफ़ी उल्लेखनीय बात थी), पौलुस की सहकर्मिणी के रूप में।

मरियम, आसिया में सुसमाचार के लिए एक परिश्रमी कार्यकर्ता।

यूनिया (Junia), प्रेरितों में विशिष्ट।

त्रूफैना और त्रूफोसा, प्रभु में पौलुस की सहयोद्धाएँ।

प्रिय पिरसिस, जिसने प्रभु के लिए बहुत परिश्रम भी किया।

रूफुस की माता, यूलिया, और नेर्युस की बहन।

पौलुस दस स्त्रियों को सम्मान देता है।

सात स्त्रियाँ अपनी सेवा के कारण विशेष रूप से उल्लिखित हैं: फीबे, प्रिस्किल्ला, मरियम, यूनिया, त्रूफैना, त्रूफोसा और पिरसिस। एक स्त्री, फीबे, को सेविका (डीकन) कहा गया है। केविन मैडिगन (Kevin Madigan) और कैरोलिन ओसिएक (Carolyn Osiek) लिखते हैं कि फीबे "पहली शताब्दी की किसी कलीसिया की एकमात्र सेविका (डीकन) है जिसका नाम हम जानते हैं"। एक और स्त्री, यूनिया, की पहचान केवल प्रेरित के रूप में नहीं, बल्कि प्रेरितों में विशिष्ट व्यक्ति के रूप में की गई है।

क्या आप जानते थे – मैंने अपने विद्यार्थियों से पूछा – कि रोमियों 16 में पुरुषों से अधिक स्त्रियों की पहचान उनके पद या सेवा से की गई है? हम बैठे रहे और इन स्त्रियों के नामों को देखते रहे। "क्यों?" अचानक एक छात्रा बोल उठी, जो व्याख्यान में इतनी डूबी हुई थी कि उसने हाथ भी नहीं उठाया। "मेरा ध्यान इस पर पहले क्यों नहीं गया?"

शायद इसलिए कि आप जिस अंग्रेज़ी बाइबल-अनुवाद का उपयोग करती हैं, वह स्त्रियों के कार्य को धुँधला कर देता है – मैंने उससे कहा, और आगे समझाने लगी।

उस दिन व्याख्यान देते हुए मैं स्वयं को सुन रही थी। मैं स्वयं को यह प्रमाण प्रस्तुत करते हुए सुन रही थी कि अंग्रेज़ी बाइबल-अनुवाद आरंभिक कलीसिया में स्त्रियों की अगुवाई की भूमिका को कैसे ढक देते हैं। मैं स्वयं को कक्षा के साथ रोमियों 16 के विभिन्न अनुवादों पर एक-एक करके चर्चा करते हुए सुन रही थी।

उदाहरण के लिए Ryrie Study Bible को लीजिए, जो 1986 में Moody Press ने प्रकाशित की (जर्मन अनुवाद में भी उपलब्ध)। मेरे दादाजी के पास यह बाइबल थी, और उनकी प्रति मेरी अलमारी में रखी है। फीबे को सेविका (डीकन) के रूप में मान्यता देने के बजाय, यह उसके कार्य का अनुवाद "दासी/सेवा करनेवाली" करती है। उसकी अध्ययन-टिप्पणी सुनिए: "जिस शब्द का अनुवाद यहाँ 'सेवा करनेवाली' किया गया है, उसका अनुवाद अक्सर 'डीकन' किया जाता है, जिससे कुछ लोग यह मान बैठते हैं कि फीबे एक डीकनेस थी। परंतु अधिक संभावना यह है कि यहाँ यह शब्द सहायिका के अनौपचारिक अर्थ में प्रयुक्त हुआ है।" "क्या आपने इस पर ध्यान दिया?" मैंने अपने विद्यार्थियों से पूछा। इसका कोई प्रमाण नहीं दिया गया कि फीबे की भूमिका का अनुवाद "डीकन" के बजाय "सेवा करनेवाली" क्यों किया जाए। इसका कोई प्रमाण नहीं दिया गया कि इस शब्द का प्रयोग "सहायिका के अनौपचारिक अर्थ में" होने की अधिक संभावना क्यों है। हम इस अनुवाद-चुनाव का कारण अनुमान लगा सकते हैं: इसका कारण यह है कि फीबे एक स्त्री थी, और इसलिए मान लिया जाता है कि वह डीकन नहीं हो सकती थी। यदि "किंख्रिया की कलीसिया का एक डीकन" वाक्यांश किसी पुरुष के नाम के बाद आया होता, तो मुझे गंभीर संदेह है कि "डीकन" के अर्थ पर कभी प्रश्न उठाया जाता।

पढ़ाते हुए मैं अपनी कलीसिया के बारे में सोच रही थी। इस बारे में कि स्त्रियाँ मंच पर बहुत कम दिखाई देती थीं, सिवाय गाने या कोई वाद्य बजाने के। मैं सोच रही थी कि कैसे स्त्रियाँ हमारी बच्चों की आराधना-सभा की अगुवाई करती थीं और पुरुष वयस्कों के बीच का कार्य। मुझे वह समय याद आया जब मुझसे वयस्कों की एक संडे स्कूल कक्षा पढ़ाने के लिए कहा गया था, और पास्टर मेरी सामग्री जाँचने आए थे। क्योंकि मैं केवल कलीसिया के इतिहास पर पढ़ा रही थी, उन्होंने मुझे ऐसा करने दिया। परंतु यदि मैंने बाइबल के पाठ पर चर्चा की होती, तो बात कुछ और होती।

मुझे याद है कि अपनी कॉलेज-कक्षा के सामने खड़े होकर मैं स्वयं को एक पाखंडी जैसा महसूस कर रही थी।

वहाँ मैं थी, अपने विद्यार्थियों को ठोस ऐतिहासिक प्रमाणों से होकर ले जाती हुई कि अगुवाई में स्त्रियों के साथ समस्या पौलुस नहीं था; समस्या यह थी कि हमने पौलुस को कैसे गलत समझा और धुँधला कर दिया। यहाँ मैं थी, अपने विद्यार्थियों को दिखाती हुई कि आरंभिक कलीसिया में स्त्रियाँ वास्तव में अगुवाई करती और शिक्षा देती थीं, यहाँ तक कि सेविकाओं (डीकन) और प्रेरितों के रूप में भी। मैंने उन्हें दिखाया कि यूनिया (Junia) को लगभग आधुनिक काल तक एक प्रेरित माना जाता रहा, जब उसके नाम का अनुवाद एक पुरुष-नाम से किया जाने लगा: यूनियास (Junias)। नए नियम के विद्वान एल्डन जे एप (Eldon Jay Epp) ने दो तालिकाएँ तैयार की हैं, जिनमें इरैस्मस (Erasmus) से लेकर बीसवीं शताब्दी तक के यूनानी नए नियमों को दर्ज किया गया है। दोनों तालिकाएँ मिलकर दिखाती हैं कि यूनानी नाम यूनिया का अनुवाद लगभग सदा उसके स्त्रीलिंग रूप में किया गया – बीसवीं शताब्दी तक, जब अचानक इस नाम का अनुवाद पुल्लिंग यूनियास के रूप में किया जाने लगा। क्यों? गवेंटा समझाती हैं: "एप दुखद और खिन्न कर देने वाले ढंग से स्पष्ट करते हैं कि बीसवीं शताब्दी में रोमियों 16:7 के साथ व्यवहार में एक महत्वपूर्ण कारक यह धारणा थी कि कोई स्त्री प्रेरित नहीं हो सकती।" यूनिया यूनि-

यास बन गई, क्योंकि आधुनिक मसीहियों ने मान लिया कि केवल पुरुष ही प्रेरित हो सकता है। एक इतिहासकार के रूप में मैं जानती थी कि पौलुस के पत्रों की स्त्रियाँ उन तथाकथित पाबंदियों के अनुरूप क्यों नहीं थीं जो आज के कलीसियाई अगुवे स्त्रियों पर लगाते हैं। मैं जानती थी कि इसका कारण यह है कि हमने पौलुस को गलत पढ़ा है। स्त्रियों के प्रति अपने व्यवहार में पौलुस असंगत नहीं है; हमने अपनी व्याख्या से उसे असंगत बना दिया है। जैसा रोमियों 16 स्पष्ट करता है, वास्तविकता यह है कि बाइबल की स्त्रियाँ स्त्री की "बाइबल आधारित" छवि की आधुनिक धारणाओं का खंडन करती हैं।

मैं यह सब जानती थी। फिर भी जब मेरी कलीसिया के अगुवों ने कहा कि हमारे यहाँ स्त्रियाँ तेरह वर्ष से बड़े लड़कों को नहीं पढ़ा सकतीं, तो मैंने उनका विरोध नहीं किया। मैं अब भी चुप रही।

मैंने अपना व्याख्यान जारी रखा। फीबे के लिए भी ऐतिहासिक वास्तविकता वही है, मैंने अपने विद्यार्थियों से कहा। पौलुस उसे सेविका (डीकन) कहता है। पाठ पर कोई विवाद नहीं करता – वे केवल पाठ के अर्थ पर विवाद कर सकते हैं। आरंभिक कलीसियाई पिताओं ने फीबे को स्त्री के रूप में भी और सेविका (डीकन) के रूप में भी मान्यता दी। उदाहरण के लिए, ओरिजन (Origenes) ने तीसरी शताब्दी के आरंभ में लिखा कि फीबे की उपाधि "प्रेरितिक अधिकार के साथ" सिद्ध करती है "कि स्त्रियाँ भी कलीसिया की सेवा में नियुक्त की जाती हैं – उसी पद पर फीबे किंख्रिया की कलीसिया में नियुक्त की गई थी। पौलुस तो बड़ी प्रशंसा और सराहना के साथ उसके उत्तम कार्यों को गिनाता भी है"। यद्यपि हम निश्चय ही प्रश्न उठा सकते हैं कि ओरिजन का "कलीसिया की सेवा" से क्या अभिप्राय था, यह स्पष्ट है कि ओरिजन ने फीबे को सौंपी गई भूमिका को स्वीकार किया। एक शताब्दी बाद "सुनहरी ज़बान" वाले प्रचारक योहन क्रिसोस्टम (Johannes Chrysostomus) ने लिखा कि फीबे के लिए यह कितना बड़ा सम्मान था कि उसका उल्लेख "सबसे पहले" किया गया, उसे "बहन" कहा गया और "सेविका (डीकन)" के रूप में विशिष्ट ठहराया गया। क्रिसोस्टम निष्कर्ष निकालते हैं कि "पुरुष और स्त्रियाँ दोनों" फीबे का एक "संत" के रूप में "अनुकरण" करें। 1 तीमुथियुस 3:11 पर अपने उपदेश में क्रिसोस्टम स्पष्ट करते हैं कि वे स्त्रियों को भी ठीक पुरुषों की तरह डीकन समझते हैं। वे लिखते हैं: "इसी प्रकार स्त्रियों को भी गंभीर होना चाहिए, दोष लगाने वाली नहीं, संयमी, सब बातों में विश्वासयोग्य। कुछ लोग कहते हैं कि [पौलुस] सामान्य रूप से स्त्रियों के विषय में बोल रहा है। परंतु ऐसा नहीं हो सकता। वह अपनी बात के बीच में स्त्रियों के बारे में कुछ क्यों डालना चाहेगा? बल्कि वह उन स्त्रियों की बात कर रहा है जो डीकन का पद रखती हैं। 'डीकन एक ही पत्नी के पति हों।' यह स्त्री डीकनों के लिए भी उचित है, क्योंकि यह आवश्यक, अच्छा और उचित है, विशेषकर कलीसिया में।"

यदि चौथी शताब्दी के एक प्राचीन/प्रेस्बिटर और डीकन द्वारा स्त्रियों की अगुवाई की यह खुली समझ आपको आश्चर्यचकित करती है, तो कलीसिया के इतिहासकार मैडिगन और ओसिएक हमें याद दिलाते हैं कि ऐसा नहीं होना चाहिए। वे लिखते हैं: "अन्ताकिया और कुस्तुंतुनिया में योहन की कलीसियाओं में स्त्री डीकन या डीकनेस भली-भाँति परिचित थीं"। फीबे को सेविका (डीकन) बताना क्रिसोस्टम के लिए आश्चर्य की बात नहीं थी, क्योंकि चौथी शताब्दी के उनके कुछ अच्छे मित्र स्वयं डीकनेस थीं। वास्तव में मैडिगन और ओसिएक ने आरंभिक कलीसिया में स्त्री डीकनों के 107 उल्लेख (शिलालेखीय और साहित्यिक) खोज निकाले हैं।

निस्संदेह – मैंने अपने विद्यार्थियों से कहा – आरंभिक कलीसिया में हर कोई अगुवाई के पदों पर स्त्रियों का समर्थन नहीं करता था। प्रेस्बिटर का पद इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि प्राचीन संसार के पितृसत्तात्मक पूर्वाग्रह किस प्रकार पहले ही मसीही विश्वास में घुस चुके थे। क्या आपको याद है कि अरस्तू स्त्री की देह को राक्षसी और विकृत मानता था? कलीसियाई अगुवे इन विचारों को अपनी परिषदों के निर्णयों में ले आए और पाँचवीं शताब्दी में ही घोषित कर दिया कि स्त्री-देह अगुवाई के लिए अनुपयुक्त है। जैसा मैडिगन और ओसिएक लिखते हैं: "आराधना-सं-

बंधी शुद्धता को पुरुषों के साथ, अशुद्धता को स्त्रियों के साथ जोड़ा जाता है। स्त्री प्रेस्बिटरों के विरुद्ध यही सबसे बड़ा तर्क था"। छठी शताब्दी तक, जब कलीसिया पूरे यूरोपीय भू-भाग में फैल गई और रोमी सत्ता के पुराने सांसारिक केंद्रों का स्थान बिशप और पुरोहित के पवित्र पदों ने ले लिया, तब स्त्रियाँ भी गतिशील थीं – परंतु पीछे की ओर, पुरुषों के अधिकार के अधीन अपने पुराने स्थान पर।

"डॉ. बार, कलीसिया में हमें यह क्यों नहीं सिखाया जाता?"

मैंने उस छात्रा की ओर देखा, और मेरा हृदय सिकुड़ गया। अधिकतर लोग यह बात जानते ही नहीं, मैंने कहा। सेमिनरियों की पाठ्यपुस्तकें अक्सर पास्टर लिखते हैं – इतिहासकार नहीं (और विशेष रूप से इतिहासकार स्त्रियाँ नहीं)। पूरकतावादी कलीसियाओं में जाने वाले अधिकतर लोग नहीं जानते कि ESV में यूनिया का अनुवाद "प्रेरितों में विशिष्ट" के बजाय "प्रेरितों में सुपरिचित" करना स्त्रियों को अगुवाई से बाहर रखने की एक सोची-समझी चाल थी (रोमियों 16:7)। लोग मानते हैं कि आरंभिक कलीसिया में स्त्रियाँ अगुवाई से बाहर रखी गई थीं, ठीक वैसे ही जैसे आधुनिक कलीसिया में वे अगुवाई से बाहर रखी जाती हैं। कलीसिया वही सिखाती है जिसे वह सत्य मानती है।

ये वे बातें थीं जो मैंने ऊँचे स्वर में कहीं।

जो मैंने नहीं कहा – और जिसने उस दिन अपने सिंक के पास खड़े होकर मेरी आँखों में आँसू ला दिए – वह यह था कि मैं सत्य जानती थी। मैं सत्य जानती थी, फिर भी अपनी कलीसिया में चुप रही। मैं चुप रही क्योंकि मुझे डर था कि मेरे पति की नौकरी चली जाएगी। मुझे अपने मित्रों को खोने का डर था। मुझे अपनी सेवकाई खोने का डर था।

पूरकतावाद उन स्त्रियों को पुरस्कृत करता है जो नियमों का पालन करती हैं। चुप रहकर मैंने इसमें योगदान दिया कि मेरे पति अगुवे बने रह सकें। चुप रहकर मैं एक सीमा तक प्रभाव रख सकी। चुप रहकर मैंने अपने आसपास की स्त्रियों की मित्रता और भरोसा बनाए रखा। चुप रहकर मैंने एक आरामदायक जीवन बनाए रखा।

परंतु मैं पौलुस की स्त्रियों के बारे में सत्य जानती थी। मैं यह वास्तविकता जानती थी कि बाइबल में जिन स्त्रियों की प्रशंसा की गई है – जैसे फीबे, प्रिस्किल्ला और यूनिया – वे स्त्री की आधुनिक "बाइबल आधारित" छवि की सीमाओं पर प्रश्नचिह्न लगाती हैं। एक इतिहासकार के रूप में मैं जानती थी कि मेरी अपनी कलीसिया में स्त्रियों को अगुवाई की भूमिकाओं से इसलिए दूर रखा जा रहा था कि रोमी पितृसत्ता फिर से आरंभिक कलीसिया में रिसकर आ गई थी। मूर्तिपूजक रोम को उतार फेंकने और यीशु को थामने के बजाय, हमने उल्टा किया था – मसीह की स्वतंत्रता को त्याग दिया था और प्राचीन संसार के दमन को अपना लिया था।

मैंने सिंक का पानी बंद किया और बर्तनों को एक के ऊपर एक रख दिया।

अब मेरे लिए चुप न रहने का समय आ गया था।

टिप्पणियाँ

1. अंग्रेज़ी भाषी जगत में पूरकतावाद (Komplementarismus) का अर्थ है स्त्री और पुरुष का एक दूसरे का पूरक होना, परंतु एक पदानुक्रमित व्यवस्था के भीतर, जिसमें पुरुष अगुवाई करता है और स्त्री पीछे चलती है, अर्थात् स्त्री पुरुष की केवल सहयोगी ही नहीं, बल्कि उसके अधीन है – सृष्टि की व्यवस्था के परिणाम या अभिव्यक्ति के रूप में। बेथ बार और अनुवादक, बहुत से अन्य मसीहियों के साथ, स्त्री और पुरुष के परस्पर पूरक होने का समर्थन करते हैं – बिना किसी पदानुक्रमित अधीनता या प्रभुता के।
2. लूथर (Luther) ने इन पाठों को, जो घर के भीतर और आपस के जीवन को व्यवस्थित करते थे, "घरेलू नियम-पट्टिकाएँ" (Haustafeln) कहा।

3. बहुत से जर्मन अनुवादों में भी ऐसा ही है।